सत्र - 2021 - 2022

अनुभवमणि

(द्वितीय संस्मरण)

हिंदी विभाग साहित्य संगम

शिवाजी महाविद्यालय

(दिल्ली विश्वविद्यालय)

निर्देशक

डॉ.सर्वेश कु.दुबे

संकलन एवं संपादनकर्त्ता

आशुतोष सिंह

पत्रिका

अनुभवमणि

www.fromoldbooks.org

संपादकीय

संपादक

आशुतोष सिंह

संपादक मंडल

राकेश कुमार

मनीषा

गौरव यादव

तकनीकी संपादक – प्रिती पाण्डेय, सत्यम पाण्डेय

www.fromoldbooks.org

भूमिका

(द्वितीय संस्करण)

बहुत सोचा कि क्या इस नवीन संस्करण की भूमिका लिखना जरूरी है? जवाब कुछ स्पष्ट नहीं मिला। परंतु इन सबसे ऊपर एक जरूरी बात, जिसके लिए यह भूमिका आवश्यक हो गई है कि इस संस्करण में "संशोधित और परिवर्धित" क्या है? तो सबसे महत्वपूर्ण परिवर्तन यह है कि इस बार अनुभवमणि में मैंने छात्रों के अनुभव के साथ-साथ उनकी रचनाएं (काव्य, गीत) जो पूर्णता उनके द्वारा रचित है उन सभी रचनाओं को अनुभवों की मणि के दूसरे संस्करण में विशेष तौर पर शामिल किया है। यह परिवर्तन छात्रों के कृतित्व तथा उनके व्यक्तित्व का परिचय देने के साथ-साथ उनमें रचना कौशल को विकसित करने का प्रयास किया गया है।

मुझे विश्वास है कि इस परिवर्तन से हमारे आने वाले नवागंतुक साथियों को भी एक नई दिशा मिलेगी। यदि ऐसा हो सका तो हमारा यह प्रयास सार्थक व सफल हो जाएगा।

मैं अपने निदेशक महोदय श्री डॉ. सर्वेश कु. दुबे सर जी का कृतज्ञ हूं। जिन्होंने इस पत्रिका को पुनः अस्तित्व में लाने के लिए हमें प्रेरित किया साथ ही आपने अपने द्वारा लिखे गए लेख को इस पत्रिका में संकलित कर, इस पत्रिका का मान बढ़ाया। मैं अपने बड़े भाई अनुभवमणि नींवकर्ता शुभम सिंह का कृतज्ञ हूं। जिन्होंने इस पत्रिका

www.fromoldbooks.org

से संबंधित समस्त जरूरतों को पूरा करने में अपना अहम योगदान दिया।

मैं अपने सहपाठियों मित्रों एवं छोटों सभी का कृतज्ञ हूं जिन्होंने इस पत्रिका अनुभवमणि संबंधी सभी जरूरतों और कमियों को पूरा करने में अपना विशेष योगदान दिया।

वर्ष -

2019-2022 बैच

आशुतोष सिंह

तृतीय वर्ष

हिंदी विभाग

(शिवाजी महाविद्यालय)

www.fromoldbooks.org

समर्पण

आदरणीय सम्मानित

निर्देशक महोदय - डॉ सर्वेश कुमार दुबे सर

एवं हिंदी विभाग के समस्त अध्यापक एवं अध्यापिकाएं जिनसे हमें इस नई पत्रिका को निरंतर निकालने का प्रोत्साहन मिला है। आप सभी को सादर सभक्ति समर्पित।

हिंदी विभाग, शिवाजी महाविद्यालय के शिक्षकगण

- डॉ. सर्वेश कुमार दुबे सर
- प्रो. रूचिरा ढींगरा मैम (प्रभारी 2021-22)
- प्रो. विरेन्द्र भारद्वाज सर
- डॉ. विकास शर्मा सर
- डॉ. ज्योति शर्मा मैम
- प्रो. दर्शन पाण्डेय सर
- डॉ. राजकुमारी मैम
- डॉ. सरिता मैम
- डॉ. कंचन मैम
- डॉ. अशोक मीणा सर
- डॉ. प्रवीण भारद्वाज मैम
- डॉ. तरूण गुप्ता सर
- डॉ. कल्पना मैम
- डॉ. अरविंदर कौर मैम

www.fromoldbooks.org

अनुक्रम

क्र.सं	विषय	नाम	पृ.सं
1	वर्तमान समय में पाठालोचन की दिशाएं	डॉ. सर्वेश कुमार दुबे	7
2	वो यादें वो पल (लेखनी-काव्य संग्रह)	मनीषा	15
3	एक सफर कॉलेज का (लिखावट-काव्य संग्रह, गीत संग्रह)	राकेश कुमार	26
4	अधूरा मैं, अधूरी यादें (लेखन-काव्य संग्रह, गीत संग्रह)	आशुतोष सिंह	43
5	अतीत (सोम-काव्य संग्रह)	अर्जुन	61
6	बीत गए वो अच्छे पल (लेख-काव्य संग्रह)	मुकेश शर्मा	71
7	कॉलेज के स्वर्ण पल (निबंध, कविता)	गौरव यादव	77
8	एक यादगार याद	वंदना	89
9	कॉलेज की यादें	प्रीति	92
10	मेरा अनुभव	शिखा यादव	95
11	कॉलेज वाले दिन	अमृता	98
12	मेरा तजुर्बा	सचिन वर्मा	100

www.fromoldbooks.org

डॉ. सर्वेश कुमार दुबे
(हिंदी विभाग, शिवाजी महाविदयालय)

वर्तमान समय में पाठालोचन की दिशाएँ

हिंदी-साहित्य कोश के पृष्ठ संख्या 446 के अनुसार ‘‘पाठालोचन’’ शब्द के लिए अंग्रेजी शब्द ‘‘टैक्सचुएल क्रिटिसिजम” का प्रयोग किया जाता है। इसका सामान्य अर्थ है पाठ संबंधी विवेचना। आज के समय में पाठा लोचन एक महत्वपूर्ण अनुसंधान का विषय बन गया है। विश्वविद्यालयों मे पाठ्क्रमों में प्रामाणिक पाठ को विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना चुनौतीपूर्ण हो जा रहा है।

विवरणात्मक भाषा-विज्ञान इसे अपना एक अंग मानता है। इसका संबंध साहित्य की भाषा से है। अतः यह एक महत्वपूर्ण कार्य स्वीकार किया जा सकता है। इस संदर्भ में मुख्य रूप से दो बातों पर विचार किया जाता है-

- रचना के वास्तविक पाठ की प्राप्ति।
- वास्तविक पाठ की प्राप्ति में बाधाओं की पहचान।

  यह समस्या उन्हीं रचनाओं के संबंध में पढ़ती है जिनका प्रकाशन या मुद्रण लेखक या रचनाकार के निर्देशन में ना हुआ हो। हिंदी साहित्य के संदर्भ में यह तथ्य विचारणीय है कि आधुनिक युग में मुद्रण कला के प्रसार के बावजूद कई रचनाओं में पाठ का निर्धारण महत्वपूर्ण समस्या है। जैसे

www.fromoldbooks.org

भारतेंदु के कई रचनाओं की सूचना रिपोर्ट तक सीमित है। इसका कारण लेखन प्रमाद माना जा सकता है।

वास्तविक पाठ दो प्रकार का हो सकता है-

1. वह पाठ जो लेखक की लेखनी से लिपिबद्ध हुआ हो।
2. वह पाठ जो लेखक या अभीष्ट रहा हो चाहे उस पाठ को लिपिबद्ध करने में लेखक-प्रमाद (आलस्य, समयाभाव,निरक्षरता या अन्य कारण) रह गए हों।

पाठालोचन पहले प्रकार के पाठ का निर्धारण करके लेखक के अभीष्ट पाठ तक पहुंचने का प्रयास करता है। किसी काव्य का उस समय तक प्रामाणिक अध्ययन प्रस्तुत नहीं किया जा सकता जब तक उसका प्रामाणिक पाठ उपलब्ध ना हो। प्राचीन समय में कई ऐसी समस्याएं थी जिसके कारण प्रमाणिक पाठ प्राप्त करने में कठिनाई आती है। वे इस प्रकार हैं-

1. मुद्रण कला (प्रेस) का अभाव।
2. लिपिकों द्वारा लिखवा लिखवाकर प्रस्तुत करना।
3. लिपिक द्वारा मानवीय भूलों द्वारा पाठ तैयार होना।
4. योग्यता प्रकाशन के कारण अशुद्ध पाठ।
5. प्रक्षेपों का समावेश। इसका कारण उपयोगितावादी धारणा थी।
6. प्रतिलिपिकार द्वारा अपूर्ण कृति को पूर्ण करना।
7. बीच की कड़ी को कभी कौशल से जोड़ना।
8. प्रसिद्ध कवि के नाम से पदों की रचना।
9. प्रतिलिपि की पीढ़ियों के अनुसार विकृतियां।
10. रचना के पाठ की स्वतंत्र शाखाओं का विकास।

www.fromoldbooks.org

11.भारत के मौखिकीय (श्रुति परंपरा) का विकास।

पाठानुसन्धान का धर्म बनता है कि प्रक्षेपों आदि विकृतियों को दूर कर प्रमाणिक पाठ प्रस्तुत करें। कुछ प्रतिलिपिकार कुछ अंशों को अपने लिए अनावश्यक समझकर छोड़ देते देते थे। पाठालोचक उन छूटे हुए अंशों की पूर्ति करने का प्रयास करता । पाठनुसंधान किसी अन्य अनुसंधान से कम महत्वपूर्ण नहीं होता। इसका संबंध भाषा और अर्थ दोनों से होता । वर्तमान समय में कंप्यूटर, सी.डी और अन्य भौतिक उपकरणों का लाभ लिया जा सकता है। संचार क्रांति के फलस्वरूप कई प्रतियों को एक साथ प्रस्तुत करके सही पाठ प्राप्त करने में अन्यों(भाषा वैज्ञानिकों,साहित्यकारों) की मदद ली जा सकती है। इससे व्यर्थ के परिश्रम से बचा जा सकता है। पाठानुसंधान साहित्यिक अनुसंधान का आधार है। इस अनुसंधान में वैज्ञानिक प्रक्रिया का अनुसरण किया जाता है। अतः यह कार्य वैज्ञानिक भी स्वीकार किया जा सकता है। पाठानुसंधान की प्रक्रिया परिश्रम वाली होती है। उस संपूर्ण प्रक्रिया को इस एक प्रकार रखा जा सकता है-

i. ग्रंथ संग्रह या सामग्री संकलन

सामग्री संकलन अनुसंधानकर्त्ता की पहली सीढ़ी है। किसी ग्रंथ का पाठालोचना करने के लिए यह आवश्यक है कि पहले उस ग्रंथ की प्रकाशित और हस्त लेख में प्राप्त प्रतियां एकत्रित कर ली जाए। सर्वप्रथम उन प्रतियों के प्राप्ति स्थलों को ज्ञात करना चाहिए। ग्रंथ की प्रतियां कहां-कहां से प्राप्त हो सकती है। उनकी सूची बनाई जाए। यह कार्य साधारण नहीं है। इस कार्य की गरिमा को पंडित

www.fromoldbooks.org

जवाहरलाल चतुर्वेदी द्वारा "सूरसागर" विषयक सामग्री संकलन के संदर्भ में देखा जा सकता है। उन्होंने सामग्री संकलन का पूरा लेखा-जोखा प्रस्तुत किया है। सूचनाएँ प्राप्ति करने की विधियां इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती हैं-

- लिखा-पढ़ी (पत्र से) से।
- मित्रों के द्वारा।
- यात्राओं के द्वारा।
- सरकारी माध्यमों का प्रयोग।
- इंटरनेट का उपयोग करने पर।
- जन संचार के माध्यमों द्वारा।

एक संपूर्ण जाल बनाने के बाद उन ग्रंथों को प्राप्त करने के प्रयास करने होंगे। कहीं से ग्रंथ उधार लेकर व्यवस्था की जा सकती है। इन ग्रंथों की किसी सुलेख या स्वयं की प्रतिलिपि कराई जा सकती है इन ग्रंथों को फोटो चित्र द्वारा प्रकाशित किया जा सकता है। माइक्रोफिल्म, टाइप (टंकण) के माध्यम से ग्रंथों का संग्रह किया जा सकता है। हस्त लेख को **"लेमिनेशन"** से काफी समय तक सुरक्षित किया जा सकता है। इस प्रकार कई स्रोतों के द्वारा ग्रंथ संग्रह की प्रक्रिया पूरी की जाती है।

ii. तुलना

ग्रंथ संग्रह के पश्चात दूसरा काम होता है उन ग्रंथों की पारस्परिक तुलना। तुलना करने के लिए उन्हें कला क्रमानुसार व्यवस्थित करना होगा। प्रत्येक ग्रंथ को एक संकेत नाम देने से अनुसंधान कार्य में सुविधा होती है। संकेत नाम देने पर ग्रंथ के पाठ संकेत (टिप्पणी

www.fromoldbooks.org

आदि में) देने में सुविधा होती है। और स्थान भी कम गिरता है। इसी तरह संकेत प्रणाली (क्रमांक आदि) प्रतिलिपि कार प्रणाली, स्थान संकेत प्रणाली, पत्र संख्या प्रणाली और पाठ समूह की प्रणाली आदि अन्य विधियों की विवेचना माता प्रसाद गुप्त द्वारा संपादित **"पृथ्वीराजरासउ"** में प्राप्त की जा सकती है। यहां उनका विवेचन पुनरावृति मात्र होगी।

प्रत्येक छंद की सभी प्रतियों के रूपों में तुलना की जाती है। इसमें निम्न बातें विचारणीय हैं-

- यह प्रति में चरण संख्या कुछ दूसरी में कुछ होगी।
- यदि किसी प्रति में कम चरण है तो किस प्रति में कौन-सा चरण नहीं है।
- यदि किसी प्रति में अधिक चरण है तो कौन सा चरण अधिक है।
- चरण के सभी शब्द सभी पतियों के समान है या अलग है।
- किस प्रति में कहां-कहां वर्तनी भेद है।

इसी प्रकार चरण, प्रति-चरण शब्द प्रतिशब्द तुलना करके प्रत्येक शब्दों के पाठों के अंतरों की सूची प्रस्तुत करनी चाहिए। उपयुक्त प्रक्रिया के दौरान तीन संबंधों से तुलना करनी होती है- प्रतिलिपि संबंधों से -प्रक्षेप संबंध से- पाठांतर संबंधों से। इस प्रकार समस्त प्रतिलिपि ग्रंथों का एक वंश वृक्ष प्रस्तुत किया जा सकता है। इस प्रकार के कार्यों में गहन अध्ययन की आवश्यकता होती है। तीनों संबंधों के द्वारा तुलनापूर्वक जब सबसे अधिक प्रामाणिक पाठ

www.fromoldbooks.org

वाली प्रति निर्धारित कर ली जाती है तो उसके पाठ को आधार मान सकते हैं। इसे मूल पाठ कहा जा सकता है किंतु प्रामाणिक पाठ नहीं माना जा सकता। प्रामाणिक पाठ पाने के लिए पाठ संबंधों की विवेचना करके पाठ संपादक के सिद्धांत निर्धारित कर लिए जाए।उन्हें इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है-

1) मिश्रण युक्त पद प्रामाणिक पाठ में बाधक है।
2) शब्द और चरण के रूप में निर्धारण।
3) कुछ स्वतंत्र पाठ परंपराओं में समान मिलने पर प्रामाणिक होगा।
4) पाठ की प्रामाणिकता की कसौटी ब्राह्य और अंतरंग संभावनाएं हैं।
5) अर्थ की समीचिनता का उद्भावन प्रमाणिक पाठ को पुष्ट करता है।

पाठ सिद्धांत निर्धारित होने के बाद मूल पाठ का प्रमाणिक स्वरूप एक पृष्ठ पर लिखना चाहिए। एक पृष्ठ पर एक छंद रहना चाहिए। और उसके नीचे जितने भी पाठांतर मिलते हैं वह सभी देने चाहिए। माता प्रसाद गुप्त द्वारा संपादित **"मिरगावती"** और पारसनाथ तिवारी द्वारा संपादित **"कबीर ग्रंथावली"** उल्लेखनीय है। इनमें पाठ -अनुसन्धान की तुलनात्मक प्रक्रिया को विस्तार से बताया गया है। पाठालोचन की वैज्ञानिक कसौटी में यदि कोई त्रुटि रह गई हो तो पाठक अपनी कसौटी के समस्त सामग्री की जांच कर सकता है। अनुसंधानकर्ता का कोई और आग्रह या पूर्वाग्रह नहीं होता

www.fromoldbooks.org

अतएव भूल-चूक के लिए वह समस्त सामग्री और समस्त प्रक्रिया को विद्वत समाज के समक्ष प्रस्तुत कर देता है।

पाठालोचन प्रक्रिया के 'अर्थ' का कोई महत्व नहीं है। शब्द के अर्थ का ज्ञान परिमाण सापेक्ष है। जिन ग्रंथों में अंतरंग साक्षी प्रमुख होता है। उसमें अर्थ न्यास महत्वपूर्ण है। किसी ग्रंथ की एक ही प्रति प्राप्त होती है तो उसका भी संपादन किया जाना चाहिए। पाठ निर्धारण में सांख्यिकी का भी उपयोग किया जाता है। जिस ग्रंथ का संपादन किया जा रहा है उसकी भाषा का व्याकरण बना लेने से सुविधा होती है। व्याकरण से वाक्य रचना के प्रामाणिक आदर्श स्वरूप की परिकल्पना हो सकती है श्यामसुंदर दास द्वारा संपादित **"कबीर ग्रंथावली"** में इस पक्ष को देखा जा सकता है। इस प्रकार पाठानुसंधान भाषा विज्ञान का महत्वपूर्ण अंग है। इसके सिद्धांत वैज्ञानिक हो गए हैं। उपयुक्त विवेचन पद्धति वैज्ञानिक है। अन्य पद्धतियों का उल्लेख हमें प्राप्त होता है-

1) पहली पद्धति सामान्य पद्धति है इसमें संपादक अधिक से अधिक अपनी बुद्धि का उपयोग करके चरणबद्ध को दूर कर शब्दबंध से पांडुलिपि प्रस्तुत करता है।
2) दूसरी पद्धति पाठांतर पद्धति है। सभी प्राप्त ग्रंथों के सरसरे अध्ययन के उपरांत अर्थ आदि की कसौटी पर जो ठीक प्रतीत होता उसे मूल पाठ मान लिया और नीचे पाद टिप्पणियों में अन्य ग्रंथों का पाठांतर दे दिया।
3) तीसरी पद्धति भाषा आदर्श पद्धति है। ग्रंथ की भाषा का आदर्श रूप खड़ा कर लिया जाता है और उसी के आधार पर

अनुभवमणि
www.fromoldbooks.org

पाठ का संशोधन प्रस्तुत कर दिया जाता है। इस प्रकार की पद्धति के आधार पर डॉ.भगवत प्रसाद दुबे ने **"कबीर काव्य का भाषा शास्त्रीय अध्ययन"** प्रस्तुत कियाहै। पाठ अनुसंधान में सहायक पुस्तकों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है-

१. अर्थ कथा का पाठ-माता प्रसाद गुप्त

२. हिंदी अनुशीलन-माता प्रसाद गुप्त

३. आलोचना-जनवरी 1935 अंक

४. तुलसी ग्रंथावली-माता प्रसाद गुप्त

५. जायसी ग्रंथावली-हिंदुस्तानी एकेडमी प्रयाग।

६. बीसलदेवरासो-हिंदी परिषद प्रयाग विश्वविद्यालय

७. मधुमालती वार्ता-नागरी प्रचारिणी सभा, काशी।

८. कबीर वाणी-पारसनाथ तिवारी

९. नामदेव ग्रंथावली किताबघर प्रकाशन, दिल्ली।

१०.सुन्दरदास ग्रंथावली-किताबघर प्रकाशन, दिल्ली।

अनुभवमणि

www.fromoldbooks.org

वो यादें वो पल

मनीषा

आ जाती है याद कभी कॉलेज के दिनों की,

तो जी भर हँस लेते हैं शुरू हो जाए सिलसिला,

उन यादों का कभी तो खुद को ही खो देते हैं।

सोच रही हूं उन दिनों को तब ना कल की फिकर थी, ना आज की टेंशन सिर्फ खुलकर जीने का मन। पसंदीदा कोर्स ना मिल पाने की वजह से मन कुछ उदास सा था। थोड़ा धैर्य रखने की आवश्यकता थी, पहले सैमेस्टर शुरू होने के साथ-साथ मुझ में कुछ बदलाव हुआ, जो विषय कभी बोर करता था, वही विषय अब मेरा फेवरेट बन गया था। अब मैं खुश थी और यह सब था मेरे उन सभी प्यारे अध्यापकों की वजह से।

यहां का अनुशासन स्कूल के अनुशासन से भिन्न था, एक स्वतंत्र माहौल था। यहां सभी अध्यापकों का स्वभाव इतना अच्छा था कि कोई कक्षा छोड़कर बाहर जाना ही ना चाहे प्रत्येक के साथ ऐसा लगाव सा हो गया कि अब लिखते हुए आंखें भर आईं।

कॉलेज में जहां एक तरफ मैं पढ़ाई कर रही थी वहीं मैंने एनसीसी ज्वाइन की, जहां मैंने बहुत कुछ सीखा। जहां मैं दूसरों के सामने खड़े होकर बोलने में कतराती थी अब उन्हीं लोगों के सामने अपनी बात रखना मुझे आ गया था।

www.fromoldbooks.org

कॉलेज के द्वित्तीय वर्ष में मैं एन एस एस से जुड़ी जहां शारीरिक/ मानसिक रूप से असहाय विद्यार्थियों की मदद करते थे।

वे हम जैसे नहीं थे परंतु उनका बात करने का तरीका मुझे उनकी तरफ खींचता था ऑनलाइन दौर शुरू हुआ कक्षाएं ऑनलाइन हो रही थी परंतु अध्यापकों के पढ़ाने के तरीके से वह ऑफलाइन कम नहीं था यह 3 साल का पता ही नहीं चला कब अध्यापक जिन्हें हम जानते तक नहीं थे वे हमारे लिए इतने खास बन गए।

अपने अक्षरों को विराम देते हुए आखिर में मैं बस इतना ही कहना चाहूंगी कि भले ही यह 3 साल खत्म होने को है परंतु मेरे दिल में यादें और यह पल हमेशा जागृत रहेंगे।

www.fromoldbooks.org

लेखनी-काव्य संग्रह

ये दिन भी याद आएंगे।

बड़े अनजाने आए थे हम यहाँ ,

दूर-दूर तक किसी से रिश्ता ना था।

पहली मुलाक़ात में कोई दोस्त बन गया,

और कोई हमें परख कर दोस्त बना।।

जगह कुछ ऐसी थी वो जहाँ किताबों से ज़्यादा मैंने अपनी गलतियों से सीखा,

टीचर का ना आना खुश कर देता था टीचर की डाँट में एक अलग ही ममता थी।।

कुछ तो अलग है यहाँ कुछ तो घर जैसा है

रुचिरा मैम का शांत स्वभाव और जैसा की उनके नाम से ही स्पष्ट है कि उनका हर विषय को रुचि लेकर पढ़ाना मुझे अत्यंत पसंद था।

दुबे सर का शिक्षा के क्षेत्र में सभी विधार्थियों को प्रोत्साहित करना, सभी का मनोबल बढ़ाना मुझे भविष्य में बहुत काम आएगा।

विरेंद्र सर का वो एक विषय पढ़ाते-पढ़ाते दूसरे कई अन्य विषयों से गुज़र जाना और याद आने पर सर का यह कहना “चलो बच्चो अपने

www.fromoldbooks.org

टॉपिक पे आते हैं अब, ये सब तो बाद की बात है अभी इस पे ध्यान मत दो" सच सर के साथ पढ़ने का आनंद ही अलग था।

दर्शन सर की क्लास मैं उनकी कही हर बात को गंभीरता से लेना मेरा शौक़ बन गया था, उनका पढ़ाने का तरीक़ा ऐसा की सभी कल्पना में खो जाए।

राजकुमारी मैम ने हमें पढ़ाने के साथ-साथ सही- गलत का भी ज्ञान दिया।

विकास सर का वह हर समय ख़ुशमिज़ाज रहना, उनके पास तो हमारी सभी समस्याओं का समाधान रहता,जो हमारे सभी कार्यों को आसान करता था।

कल्पना मैम का तो बच्चों से बहुत अधिक स्नेह था,उनका पढ़ाने व समझाने का तरीक़ा मुझे अत्यंत पसंद था।

अशोक सर का सभी विधार्थियों के साथ विशेष लगाव सा था,उनका चेहरा व उनकी खुली विचारों वाली बातें हमें उन्हें अपना दोस्त मानने पर मजबूर करती थी।

तरुण सर से पढ़ने की जिज्ञासा में उनकी कक्षा में 10 मिनट पहले जाकर बैठने में मुझे खुद पर फक्र महसूस होता।

www.fromoldbooks.org

अरविन्दर मैम का “देखो बच्चों”, “सुनो बच्चों” कहकर पुकारने से मुझे मेरी माँ के वहाँ होने का ऐहसास होता,क्योंकि उनकी और मेरी माँ की आवाज़ थोड़ी मिलती थी।

प्रवीण मैम मुझे थोड़ी चंचल लगती। उनका डाँट की जगह बच्चों को प्यार से समझाना मुझे बेहद पसंद था, उनके गुस्से में भी प्यार झलकता था।

सरिता मैम की समझदारी के किस्से सुनकर ऐसा लगता जैसे मुश्किल घड़ी में मैं उनके जैसी बन जाऊँ।

कंचन मैम के चेहरे से साफ़ झलकता की उनका मन कितना कोमल था, पढ़ाने का तारीका ऐसा की कोई क्लास से बाहर जाना ही ना चाहे।

ऐसा तो नही कहूँगी कि जिसकी जितनी तारीफ़ करूँ कम है,

क्योंकि वह सच में कम है ।

बहुत याद आएँगे ये दिन !!

मैं सभी शिक्षकों को तहे दिल से नमस्कार करती हूं।

धन्यवाद

www.fromoldbooks.org

तुझसे अभी मेरा हिसाब बाकी है।

तेरे द्वारा की गई हर बेज्जती को,

दुनिया वालों को बताना अभी बाकी है,

सुन, तुझसे अभी मेरा हिसाब बाकी है।

हां मानती हूँ थोड़ी नासमझ थी मैं,

पर समझदारी दिखाना अभी बाकी है।

मुझे तो खुद समझ नहीं आता,

कैसे रह गई इतने दिन मैं तेरे साथ,

अब बस, तेरे और मेरे दोनों के लिए इतना काफी है,

सुन, तुझसे अभी मेरा हिसाब बाकी है।

उस रात मैं चीखती रही चिल्लाती रही,

वो चीखना और चिल्लाना तेरा अभी बाकी है।

उस रात जितना जख्म तूने मुझे दिया,

तेरे दिए हर उस जख्म का इलाज अभी बाकी है,

सुन, तुझसे अभी मेरा हिसाब बाकी है।

www.fromoldbooks.org

तेरे इस घिनौने काम के लिए,

तुझे तेरे ही नजरों में गिराना अभी बाकी है।

तूने तो तोड़ दी वो सारी कसमें वो वादे,

पर मेरा तेरी औकात दिखाने का वो वादा अभी बाकी है।

सुन, तुझसे अभी मेरा हिसाब बाकी है।

जो दिए हैं तूने घाव मुझे,

वह सब को बताना अभी बाकी है।

तू ही है गुन्हेगार मेरा,

यह इल्जाम लगाना अभी मेरा बाकी है,

और हां, एक बात मेरी भी सुनता जा, तुझसे अभी मेरा हिसाब बाकी है।

www.fromoldbooks.org

क्या तुमने कभी सोचा है?

क्या तुमने कभी सोचा है?

क्या इसी बात का

गुस्सा है तुम्हारे अंदर

कि मैं तुम्हारे हिसाब से

नहीं रह रही,

तुम कहते हो

मैं हर बार गलत हूं

और मेरी सोच भी अलग है,

आपत्ति है तुम्हें

मेरे विरोध जताने पर

तुम चाहते हो कि तुम्हारे

गलत होने पर भी

तुमसे कुछ ना कहा जाए,

पर यह कैसे संभव है कि

हम तुम्हारे बने बनाए ढांचे में ढल जाए

ढल जाए तुम्हारे मनमाफिक तरीके से

कैसे संभव है कि

www.fromoldbooks.org

तुम्हारी तरह ही सोचे सब कुछ

देखे तुम्हारी ही नजरों से

दुनिया और उसके आचरण को

तुम्हारी तरह ही बोले सब कुछ

तुम्हारी बीच रहते

कैसे संभव है?

क्या कभी समझने की कोशिश

की है तुमने मुझे

या सिर्फ हमेशा अपना ही

पक्ष देखा है?

एक रिश्ते की नीव आपसी

विश्वास एवं सहयोग पर टिकी होती है सभी जरूरतें पूरी करना ही काफी मात्र नहीं

क्या सोचा है कभी तुमने?

www.fromoldbooks.org

वक्त की दौड़

सपने थे, विश्वास था, साथ था,

उनका लाड लड़ाना अभी बाकी था,

वक्त ने बाजी मारी और छीन ली दुनिया हमारी।

क्या वह भरोसा कुछ पल का ही था,

अभी तो बातों का पिटारा मन में ही भरा था।

जरा सी आहट होती तो पहचान लेते,

उन्हें मनाते, बहलाते, फुसलाते,

जैसे भी करके जाने से तो रोक ही लेते।

अब कहां बची थी इच्छाशक्ति,

उनके बिना कैसे जिंदगी कटती।

किसी से साझा भी की ना गई,

मन में चल रही तूफानों की लहरें।

वो थे हमारे दादा जी और हम उनकी पोती ठहरे।

अपने अंदर का दुख भी किसी को बताया ना गया,

कितना प्यार करते थे हम उनसे उन पर जताया ना गया।

मैंने भी छुपा लिया अपने अंदर का दर्द

क्योंकि मुझसे भी ज्यादा उस समय कोई टूट चुका था,

www.fromoldbooks.org

उसे भी तो संभालना था वह भी तो वक्त से रूट चुका था।

तुम चाहो तो रूठे को भी मना सकते हो,

अपनों से माफी मांग उन्हें गले से लगा सकते हो।

वक्त बदलते ज्यादा देर नहीं लगती,

बटोर लो सारे रिश्ते को सारी खुशियां,

क्योंकि अपनों को दूर जाते जरा सी भी देर नहीं लगती।

मनीषा गुज्जर
हिंदी विशेष, शिवाजी कॉलेज

www.fromoldbooks.org

एक सफर कॉलेज का

राकेश कुमार

इस कोरे पृष्ठ को कैसे रंगीन कर दूँ मेरे मस्तिष्क में ऐसा कोई विचार ही नहीं आ रहा है और कहां से अपनी कलम को शुरू करूं समझ ही नहीं आ रहा है ऐसा शायद मेरे साथ इसलिए हो रहा है क्योंकि जुलाई 2019 के बाद के समय को मुझे शब्दों में उजागर करना ही नहीं आ रहा है लेकिन जो कुछ भी हो मैं अपनी भावनाओं और अपने बीते समय को लिखित माध्यम में जरूर आप सभी के समक्ष उजागर करूंगा। अक्सर मैंने जो दूसरे लोगों से सुना था की हमारी किस्मत हमें वहीं ले जाती है जहां जाने के लिए हम बने होते हैं और मेरी किस्मत भी मुझे वहीं ले आई जहां शायद मैं आना चाहता था वह जगह थी भारत की राजधानी दिल्ली, पश्चिमी दिल्ली का राजा गार्डन। देश की राजधानी के विषय में सुंदर सी एक पंक्ति भी बहुचर्चित है "दिल्ली है दिल वालों की" और मैं इसी दिलवाले शहर से स्नातक की डिग्री भी लेने जा रहा था। इसी शहर का मैं रहने वाला भी हूं। 6 जुलाई 2019 को सर्वप्रथम मैंने शिवाजी महाविद्यालय में कदम रखा ,और फिर मैंने विभिन्न महाविद्यालयों की सूचियों को इंटरनेट पर खोजा तो मेरे घर से सबसे नजदीक शिवाजी महाविद्यालय था जो मेरे घर से लगभग एक घंटा 30 मिनट की समय दूरी पर था, फिर निर्णय करके मैने इस महाविद्यालय में दाखिला ले लिया। दाखिले के दौरान ही मुझे मेरे विद्यालय कक्षा के सहपाठी मिले तो उन्होंने बताया कि मैंने भी इसी महाविद्यालय में दाखिला लिया है, तो मन में एक अलग ही खुशी छाने लगी कुछ दिनों बाद फोन पर एक सूचना आई की

www.fromoldbooks.org

आपको 20 जुलाई को महाविद्यालय मे आना है। इस दिन शिवाजी महाविद्यालय का अभिविन्यास कार्यक्रम होना निश्चित हुआ था और 21 जुलाई से हमारी कक्षाओ का निरंतर व सुचारू रूप से शुरू होना था। अर्थात् 21 जुलाई से कक्षाओं का श्रीगणेश होना था। मैं महाविद्यालय आने के लिए बहुत उत्साहित था क्योंकि कॉलेज का पहला दिन जो था, लेकिन साथ ही साथ हृदय में घबराहट और मन में डर भी था कि मैं कैसे महाविद्यालय पहुंच पाऊंगा। मैं दूसरों से पूछ-पूछ कर अंत में कॉलेज पहुंच ही गया था लेकिन पहला दिन था बहुत सारी समस्याओ का सामना भी करना पड़ा क्योंकि मैं एकदम अनजान था। मैं किसी को भी नहीं जानता था फिर एक दिन अचानक मेरी भेंट वरिष्ठ साथी शुभम सिंह से हुई बाद में पता चला कि यह मेरे हिंदी विभाग के ही वरिष्ठ छात्र है इन्होंने काफी हद तक सहायता करके अपने दायित्व को निभाया था फिर कक्षा में मन लगने लगा था, नए मित्र बनने लगे थे | वरिष्ठ साथियों और अध्यापकों से सूचना मिली कि 18 अगस्त को नवागंतुक समारोह है | इस कार्यक्रम को हंसते नाचते गाते हुए आयोजित किया गया था, क्योंकि मन में एक उमंग थी, कॉलेजो के कार्यक्रम को देखने की | क्योंकि विद्यालय की दुनिया से अलग ही होता है महाविद्यालय का कार्यक्रम | नवागंतुक समारोह वाले दिन ही मुझे जानकारी प्राप्त हुई कि मैं दिल्ली विश्वविद्यालय के सबसे प्रतिष्ठित शिवाजी महाविद्यालय से बी.ए. हिंदी विशेष की डिग्री लेने वाला एक छात्र हूं और यह महाविद्यालय (NAAC) द्वारा [ए ग्रेड] मान्यता प्राप्त में से एक है इस महाविद्यालय से डिग्री ग्रहण करने के बाद कई छात्रों ने अपने लक्ष्य को भी प्राप्त कर लिया है क्योंकि शिवाजी महाविद्यालय का प्लेटफार्म बहुत ही अनोखा है क्योंकि इस

www.fromoldbooks.org

महाविद्यालय में भिन्न-भिन्न सोसाइटी है, इन सोसाइटी में भागीदारी निभाकर छात्रों ने अपना चोमुखी विकास किया था | दुनिया भले ही मंगल ग्रह पर जीवन खोजने के लिए गई हो लेकिन हद तो उस दिन पार हो गई थी जब एक सामान्य विद्यालय से आए लड़के में विकास नजर आया क्योकि महाविद्यालय की एक लड़की ने अपने हाथ को हिलाकर हाय जो किया था|

इसी बीच परियोजना कार्य, कक्षा परीक्षा और परीक्षा का सफर भी चल ही रहा था |देश मे अचानक 2020 की एक ऐसी फरवरी आई जो अपने साथ कोरोना जैसी महामारी को लेकर आई जिसने पूरी सुव्यवस्थित शिक्षा योजना को अव्यवस्थित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। महाविद्यालय में जो सबसे बेहद खूबसूरत मेरा निजी अनुभव रहा है, वह मेरे गुरुजनो का मित्रता पूर्ण मार्गदर्शन और सहयोगियों का अच्छा स्वभाव रहा है | हिंदी विभाग के लगभग सभी अध्यपकों से मेरा अत्यंत अनुपम लगाव है| मुझे अपने आपको ऐसा महसूस होता है की मैने महाविद्यालय की भिन्न -भिन्न सोसायटी में अपनी भागीदारी निभाई (NSS) राष्ट्रिय सेवा योजना में हिस्सा लिया था, हिंदी विभाग की साहित्यक सांस्कृतिक संस्था साहित्य संगम से तृतीय वर्ष में मैंने सचिव पद की जिम्मेदारी को भी स्वीकार /ग्रहण किया है इस पद पर कार्य करके नेतृत्व, संयोजन, गंभीरता, धैर्य और साहस जैसे गुणों को विकसित करने का अवसर मिला। महाविद्यालय जीवन हमें एक नए वातावरण में उजागर करता है |जहाँ हमें पाठ्यक्रम और धारा तय करने के आलावा एक विद्यार्थी को पूरे वर्ष होने वाले विभिन्न समाज और आयोजनों का हिस्सा बनकर अपना आत्म विश्वास बढ़ाने का मौका मिलता है, और इसी जीवन में हमे नई चीजे सीखनी होती है और नई चुनौतियों का सामना भी खुद करना पड़ता है, इसी समय में हमे एक -दुसरे से खुद ही घुलना

www.fromoldbooks.org

-मिलना होता है | मैं एक भाग्यशाली छात्र हूँ जिसको निरंतर महाविद्यालय से स्नातक करने का और समाज का ज्ञान ग्रहण करने तथा जीवन का आनंद लेने का अवसर मिला है "अपने ख्वाबो को तकिय तले दबाकर आसमान नहीं छू पाओगे, कॉलेज में नहीं बनाया तो क्या किस्से बुढ़ापे में बनाओगे" महाविद्यालय में जो मेरा सबसे खूबसूरत और अतुलनीय अनुभव रहा, वह रहा मेरे गुरुजनो का मेरे प्रति मित्रता पूर्ण स्वभाव रहा | सर्वप्रथम मैं अपना अनुभव विभागीय प्रभारी रूचिरा ढींगरा मैम जी से शुरू करता हूँ, मैम जी की कक्षाओं में किताबो के ज्ञान के आलावा समाजी ज्ञान सिखने का अवसर भी मिलता है, साथ ही इनकी कक्षाओं में जाकर मैंने अनुशासन की एक बेहतर कला को भी सीखा है | मैम जी का प्रभावशाली व्यक्तित्व ही जीवन के अनेक आधारभूत सिधान्तो को व्यक्त करता है | अगर समय के पाबन्दी शिक्षक की बात की करू तो हिंदी विभाग में केवल एक ही शिक्षक है जिनको समय की पहचान है जो समय के महत्त्व को समझते है आदरणीय सर्वेश कुमार दुबे सर ने एक तथ्य को स्पष्ट कर दिया है "परिवर्तन ही प्रकृति का नियम है" सर का अध्यापन कराने का तरीका ही सबसे अनोखा है। स्नेह और प्रेम पूर्वक अध्यापन कराने की कला तो कोई वीरेंद्र सर से सीखे जो कठिन से कठिन विषय को भी सरल बना देते है बिना किसी बाधाओं के सफलता पूर्वक ज्ञान का सम्प्रेषण संक्षेप रूप में मस्तिष्क में बैठ जाता है | श्रीमान दर्शन सर के पढ़ाने का तरीका सबसे अद्भुत और अनोखा होता है, क्योंकि सर उदाहरणों में विभिन्न कवियों की रचनाओं को सुनाते हैं और अचंभा तो तब होता है जब यह रचनाओं को मुंह जवानी मंत्रों की तरह सुना देते हैं | इनके व्यक्तित्व और ज्ञान को हिंदी के क्षेत्र में सर्व ज्ञाता की संज्ञा भी दी जा सकती है और मैं तो बहुत ही भाग्यशाली हूं कि मुझे आदरणीय विकास शर्मा सर से भी पढ़ने का अवसर मिला है, यह मेरे मित्र समान शिक्षक हैं जिनसे मैंने

www.fromoldbooks.org

अपनी छोटी-छोटी बातों को भी बिना घबराहट के और बिना झिझके, इनसे साझा किया है | मैं विकास शर्मा सर को विद्यार्थी हित की संज्ञा देना चाहूंगा | मेरा तो यह सौभाग्य है कि मेरे को तरुण गुप्ता सर से भी ज्ञान ग्रहण करने का अवसर प्राप्त हुआ है इन सर की तुलना में सरकारी इमारत संसद से करना चाहूंगा क्योंकि संसद सरकार का आईना होती है उसी प्रकार तरुण सर ने भी मेरे जीवन में उसी आईने की तरह काम किया है और मुझे वास्तविकता के नजदीक लाकर खड़ा करने में अपना योगदान दिया है मार्मिक स्वभाव प्रेरणा और स्नेह से याद आ रहा है कि मुझे कंचन मैम, अरविंदर मैम ,सरिता मैम, परवीन मैम , राजकुमारी मैम और ज्योति मैम की समझाने की बहुत याद आएगी क्योंकि यह सभी अध्यापिकाए प्रत्येक बिंदु को विस्तार पूर्वक सरल व सहज भाषा के माध्यम से समझाने का निरंतर प्रयास करती है और समझाने में सफल भी हो जाती है| शिवाजी महाविद्यालय में "जब मैंने दाखिला लिया था तो हर प्रकार से नादान था मैं गीली मिट्टी की सामान था, आकार देकर आपने घड़ा बना दिया हारे हुए- हारे हुए इंसान के भीतर ना टूटने वाली उम्मीद जगा दी" मेरे कर्म इतने अच्छे है की ऐसे शख्स को भगवान ने मेरा गुरु बना दिया है, नहीं है-नहीं है ,कोई शब्द कैसे करूं मैं धन्यवाद बस चाहिए हर पल आप सब का आशीर्वाद। "हूं जहां पर आज मैं हूं - जहां पर आज मै, उसी में बड़ा योगदान आप सभी का जिन्होंने मुझे दिया है इतना ज्ञान" इसी अपनी कलम से मैं सभी महान आत्माओं का सत्कार करता हूं | मैं सतयुग ज्ञान के सागर ऐसे अनेक गुरुओं को प्रणाम मैं बारंबार करता हूं जिनकी सफलता का पैमाना मेरा सफल हो जाना है अपना आशीष मेरे सिर पर सदैव रखें | आप सभी गुरुओं की शिक्षा से मैं बहुत ही रोमांचित हूं मैं भगवान का शुक्रगुजार करता हूं जो उन्होंने मुझे आपके जैसे गुरु उपलब्ध कराए हैं | आपने मुझे शिक्षा

www.fromoldbooks.org

देकर बनाया इस काबिल कि मैं लड़ सकू हजार मुश्किलों से आपने मुझे नैतिक शिक्षा का पाठ भी पढ़ाया है और आपने समय-समय पर जागरूक भी कराया है कि जीवन में लाख मुश्किलें आती हैं और मैं अपने आप को बहुत सौभाग्यशाली समझता हूं, जो मैंने आप जैसे गुरुओं को पाया है जब भी मुझे पढ़ाई में कठिनाई आई है तो आपने हर वक्त मेरी उस कठिनाई को हल किया है जुलाई 2019 में मैंने शिवाजी महाविद्यालय में पहली बार कदम रखा था जब से आज तक की विभिन्न स्मृतियों को मैंने इन पृष्ठों पर उजागर किया है जो 17 वर्षों के बाद का सबसे अनोखा समय और यादो से कई गुना अधिक है और जो कुछ भी मैंने अपनी कलम से लिखा है इसमें कुछ भी अतिशयोक्ति नहीं है मैंने वास्तविकता को शब्दों के माध्यम से उजागर किया है (इस महाविद्यालय जीवन में कुछ पाया तो कुछ खोया है मैंने पर ज्यादातर यादों को संजोया है मैंने)

www.fromoldbooks.org

लिखावट-काव्य संग्रह

उलझन

इस नए दौर की ये उलझन है

प्यार से हर किसी को अनबन है

इस नए दौर की ये उलझन है
प्यार से हर किसी को अनबन है

मैं सुखो को तलाश करता हूँ

मैं सुखो को तलाश करता हूँ

हर तरफ शोर सा है भटकन है

इस नए दौर की ये उलझन है

शक्ल से कुछ पता नहीं चलता

कौन रहभर है कौन रहझन है

इस नए दौर की ये उलझन है

सामना जिससे से रोज होता है

वह एक साफ सुथरा सा दर्पण है

रूठ कर वो चला गया शायद

www.fromoldbooks.org

रूठ कर वो चला गया शायद
आज बेचैन मेरा तनमन है
आज बेचैन मेरा तनमन है

इस नए दौर की ये उलझन है
बात मीठी करे छुरी रखकर
बात मीठी करे छुरी रखकर
दोस्त नहीं वो मेरा दुश्मन है

सच हमेशा वजूद रखता है
सच हमेशा वजूद रखता है

झूठ एक खोखला सा बर्तन है
खूब सूरत नहीं दिल जिसका
खूब सूरत नहीं दिल जिसका

नफरतो का वो एक मसकन है
इस नए दौर की ये उलझन है
प्यार से हर किसी को अनबन है

मैं सुखो को तलाश करता हूँ
हर तरफ शोर सा है भटकन है

www.fromoldbooks.org

हम गांव की गलियां भूल रहे हैं।

हम शहरी जीवन के आगे

हम गांव की गलियां भूल गए

ये AC कमरे याद रहे

हम घर का आंगन भूल गए

ये AC कमरे याद रहे

हम घर का आंगन भूल गए

हमें वो दिन भी याद आते है

जब हम बरसात के मौसम मे

कागज की नाव चलाया करते थे

बातों - बातों मे ही कस्ती पार हो जाया करते थे

हम इस शहरी जीवन की भाग दौड़ में

हम वो बचपन की यादे भूल गए

www.fromoldbooks.org

जीवन की याद में

हम अपना बचपन भूल गए

कभी जिन राहों पर हम

कभी साईकिल चलाया करते थे

इन पक्की सड़को के आगे

हम वो पगडंडिया भूल गए

शहरी जीवन के आगे हम

गांव की गलियां भूल गए

पिज्जा ,बर्गर, पेप्सी ,फ्रेंच फ्राई याद रही

हम लस्सी ,शरबत, कचौड़ी भूल गए

हम खुद में इतने व्यस्त रहे

कि हम रिश्तो को भूल गए

हमें शहरों के पार्क याद रहे

हम गांव की हरियाली और

बाग बगीचे भूल गए

www.fromoldbooks.org

हमें फूलो का तोहफा याद रहा

हम फूलो का खेत और

फूलो की बगिया भूल गए

शहरी जीवन के आगे

हम गांव की गलियां भूल गए

हमे फ्रिज का पानी याद है

और हम मटके का पानी भूल गए

हमें लेंटर कमरों की छाव याद है

और हम पीपल, बरगद की छाँव भूल गए

हमें गुस्लखाने के फव्वारे याद है

हम सावन की बरसाते भूल गए

हमें पशिचमी सभ्यता याद है

और हम धीरे- धीरे संस्कारो

की बोलियों को भूल रहे

शहरी जीवन के आगे

हम गांव की गलियां भूल रहे

www.fromoldbooks.org

(गीत संग्रह)

मंदिर वहीं बनायेंगे

तन से भले ही न जाये पाये हम.....2

घर से ही करे प्रणाम

तन से भले ही न जाये पाए हम

घर से ही करे प्रणाम

मन से ही मिलकर पहुँचो

सब अवध पूरी के धाम

बोलो राम ,बोलो राम ,बोलो राम राम ..

एक ईंट अपने घर पर

तुम राम नाम की रख लेना

एक ईंट अपने घर पर

तुम राम नाम की रख लेना

अक्षत रोली, मोली,मिठाई ,

जल से उसका पूजन कर लेना

राम नाम के दीप जलाकर दीपावली मनायेंगे

पुष्पों से घर आँगन, दहलीज, मंदिर सभी सजायेंगे

www.fromoldbooks.org

पूजन सरयू के तट होगा

पूजन सरयू के तट होगा हाँ हाँ हाँ

गाते जय श्री राम ,जय श्री राम

मन से ही मिलकर पहुंचो

सब अवध पूरी के धाम

बोलो राम बोलो राम बोलो राम राम।

जिस पल की थी हमें प्रतीक्षा जीवन मे वो पल आया है

नैना दर्शन पाएंगे कितने पुण्यो का फल पाया है

राम सीया के दर्शन पाकर कष्ट सभी मिट जायेंगे। .....

कोटि -कोटि कंठो के स्वर

जय हो जय हो जय जय गायेंगे

दसों दिशाओ मे गूंजेगा

दसो दिशाओ मे गूंजेंगा। ...

रघुनंदन का नाम

मन से ही मिलकर पहुँचो

सब अवध पूरी के धाम

बोलो राम बोलो राम बोलो राम राम

www.fromoldbooks.org

नदी और सागर

पर्वतों से उतर कर चली आई हूँ
जंगलों से गुजर कर चली आई हूँ

तू जमाने से ठहरा मेरी चाह में
पर न आया कभी भी मेरी राह में

मैं अकेली ही हिम्मत जुटा कर चली
स्वप्न देखा कि ठहरो तेरी बाह में

साथ खुशियों का सारा शहर लाई हूँ
प्यास आधी लिये चली आई हूँ

पर्वतों से उतर कर चली आई हूँ
जंगलों से गुजर कर चली आई हूँ

कितना गंभीर है तू खड़ा ही रहा
बात दिल में रखा पर अड़ा ही रहा

www.fromoldbooks.org

ये पहेली न मुझसे कभी भी बुझी
जल में रहकर भी प्यासा सदा तू रहा
मीठे जल की भरी गगरी लाई हूँ

जंगलों से गुजर कर चली आई हूँ
पर्वतों से उतरकर चली आई हूँ
जंगलों से गुजर कर चली आई हूँ
बात दिल की कभी लव पर लाया नहीं
तेरी लहरों ने आकर बुलाया नहीं

पर जो यह वादा मैंने किया था कभी
अपना वादा भी मैंने भूलाया नहीं
अनकहा प्यार वह में छुपा लाई हूँ
जंगलों से गुजर कर चली आई हूँ
पर्वतों से उतर कर चली आई हूँ
लोग कहते हैं भीतर से खारा है तू
लोग कहते हैं भीतर से खारा है तू
मौसमी इन हवाओं का मारा है तू

www.fromoldbooks.org

तू बवंडर में खुद को संभाला मगर
जीवन यापन का बनता सहारा है तू

मेरी नजरों से तुमको ना देखे कोई
देख लेता तो कहता कि प्यारा है तू
जंगलों से गुजर कर चली आई हूँ
पर्वतों से उतर कर चली आई हूँ

हैं अमर प्यार तेरा यह मुझको पता
तेरी आंखें प्रतीक्षा में मेरी सदा
एक पल रूकू मै राह में
तेरी चाहत में जल ये निरंतर बहा

जग के बंधन सभी तोड़कर आई हूँ
जंगलों से गुजर कर चली आई हूँ
पर्वतों से मचलकर चली आई हूँ

प्यार में दूरियां जब सिमटटी गई
चाह बढती गई पीर घटती गई

www.fromoldbooks.org

तेरी बाँहो में आई तो ऐसा लगा

मैं सुहागन अमरता की हूँ बन गई

बेखुदी में जो खुद को भुला आई हूँ

जंगलों से गुजर कर चली आई हूँ

पर्वतों से निकल कर आई हूँ

जंगलों से गुजर कर चली आई हूँ

तेरी गहराइयों तक है जाना मुझे

खारे पानी के भीतर समाना मुझे

इस जमाने की ना कोई परवाह है मुझे

छोड़कर ये जहां तुझको पाना है मुझे

चाह पावन मिलन की जगा आई हूँ

चाह पावन मिलन जगा आई हूँ

जंगलों से गुजर कर चली आई हूँ

पर्वतों से निकलकर चली आई हूँ

जंगलों से गुजर कर चली आई हूँ |

राकेश कुमार

हिंदी विशेष ,शिवाजी कॉलेज

www.fromoldbooks.org

अधूरा मैं, अधूरी यादें

आशुतोष सिंह

अधूरा मैं, अधूरी यादें,

कुछ अच्छी, कुछ बुरी यादें,

कुछ भूली, कुछ बिसरी यादें,

अकेला मैं, अकेली यादें,

मेरे दिल को भाती यादें,

कभी-कभी रुलाती यादें,

कुछ भूली कुछ बिसरी यादें, आज भी संभाले रखी यादें.....

आज से करीब ढाई वर्ष पूर्व सन् 2019 के मध्य माह मे 12वीं कक्षा के परिणाम आने के बाद उच्चतर अध्ययन के लिए दाखिलाओं का दौर शुरू हो गया था। इसी दौरान मुझे मेरे मित्र ने शिवाजी महाविद्यालय के बारे में बताया, कि यह महाविद्यालय अच्छा है उच्चतर अध्ययन के लिए, फिर क्या था हम भी इस महाविद्यालय में दाखिला लेने के लिए चल दिए।

पहले दिन जब मैं अपने ट्यूशन टीचर के साथ इस महाविद्यालय में प्रवेश किया तो, मैं डरा हुआ था किंतु अपने शिक्षक के साथ था, तो हर समस्या से लड़ने का साहस भी मन में था। मैंने हवामहल से 70₹ का विवरण-पत्रिका खरीदा जिसमें दाखिला फार्म भी लगा हुआ था। इस दौरान मैं लेट हो गया था समय 2:00 बज रहा था, तो

www.fromoldbooks.org

सहकर्मियों ने कहा अगले दिन आने को, मैं अगले दिन आया और दाखिला लिया।

दाखिले के दौरान मैं स्टाफ रूम में पहुंचा तो वहां पर दर्शन पांडे सर, तरुण सर, अरविंदर मैम जी से मेरी मुलाकात हुई। तरुण सर ने मुझे अपने बगल में बिठाया जो कि काफी सुंदर अनुभव था मेरे लिए क्योंकि मैं थोड़ा डरा सहमा था। दर्शन सर ने कागज़ात मांगे। प्रतिशत निकालने के लिए मेरे अंको का, मेरे दाखिले की प्रक्रिया शुरू हो गई थी। कागजी कार्यवाही भी शुरू हो गई थी, दर्शन सर ने मुझसे पूछा जीई में क्या लोगे? तो मैंने कहा इतिहास विषय लूंगा लेकिन सर ने कहा संस्कृत ले लो मैंने मना कर दिया और इतिहास विषय चुन लिया जोकि शिवाजी कॉलेज में मेरी सबसे बड़ी और पहली गलती साबित हुई। खैर शाम तक कॉलेज में रहा और शाम को 5:10 पर मेरे दाखिले की प्रक्रिया खत्म हुई और मैं 7:00 बजे अपने घर पहुँचा । पिताजी को बताया कि मैंने हिंदी विशेष में दाखिला लिया है, तो वह काफी नाराज हुए, लेकिन मैंने मन बना लिया था कि अब शिवाजी कॉलेज से ही हिंदी का सफर शुरू होगा।

पहला दिन शिवाजी कॉलेज में छात्र के रूप में आगमन हुआ तो प्रथम अध्यापिका के रूप में हमें डॉक्टर सरिता मैम मिली, जिनसे हमने सामान्य बातचीत की। जब मैंने प्रथम बार सरिता मैम जी को देखा तो, वह मुझे ट्विंकल खन्ना जैसी प्रतीत हुई। फिर धीरे-धीरे कक्षाओं का दौर शुरू हुआ और सरिता मैडम जी ने प्रोफेसर रुचिरा ढींगरा मैम जी से मिलवाया, उन्होंने प्रोफेसर साहिबा के समक्ष मेरी काफी तारीफ की, इन तारीफों से मैम काफी प्रभावित हुई और उन्होंने मेरे सिर को

www.fromoldbooks.org

सहलाया और चली गई। कक्षाओं के दौरान रुचिरा मैम जी से मैं रूबरू हुआ उनके पढ़ाने के तरीकों ने मुझे उनकी ओर आकर्षित किया साथ ही तरुण सर, कंचन मैम, दर्शन सर जी के पढ़ाने का तरीका ऑफलाइन मोड में काफी आकर्षक रहा।

इसी दौरान कॉलेज को देखना क्रिकेट खेलना तथा दूसरे डिपार्टमेंट के कार्यक्रम में जाकर खाना खाने का मजा ही कुछ और था, मुझे इस दौरान कई चीजें सीखने को मिली जैसे कार्यक्रम में बोलना कैसे होता है? कार्यक्रम की व्यवस्था कैसे की जाती है? आदि चीजें।

कॉलेज के दौरान मुझे शाश्वत मिश्रा तथा शुभम सिंह भैया का अच्छा मार्गदर्शन मिला। उनसे काफी कुछ चीजें सीखने को मिली। कॉलेज में उत्सव को देखने तथा कार्यक्रमों में कार्यकारिणी सदस्य के रूप में काम करने में काफी आनंद प्राप्त हुआ। मिड सैमेस्टर ब्रेक मार्च 2020 के माह में कॉलेज जो बंद हुआ, कोरोनावायरस के वजह से वह फिर आज तक नहीं खुला। महामारी के प्रकोप के कारण कक्षाएं ऑनलाइन होने लगी। जो कि काफी अलग और बुरा अनुभव था, मेरे लिए क्योंकि मुझे फोन चलाना नहीं आता था "धीरे-धीरे खुद में किया परिवर्तन, बदले दौर-ऐ-जमाने का किया समर्थन"।

अब काफी चीजें बदल चुकी थी। कक्षा में आनंद आने लगा था। हम थोड़ा आलसी और असमयानिष्ट होते जा रहे थे। इन सभी परिवर्तनों का कारण मैं इस महामारी को ही मानता हूं। कॉलेज के पेपर ऑनलाइन हुए जो एक अलग अनुभव था अगले अध्ययन सत्र में, विकास सर, अशोक सर, अरविंदर मैम, राजकुमारी मैम, दुबे सर, दर्शन सर, प्रवीण मैम, वीरेंद्र सर, कंचन मैम, सरिता मैम, ज्योति

www.fromoldbooks.org

शर्मा मैम जी की कक्षाएं लेने का सौभाग्य तथा उन सभी का स्नेह आशीष प्राप्त हुआ। जो की अद्भुत और आनंदमय अनुभव था, इस दौरान मेरी दुबे सर से खासी नजदीकियां बढ़ी | दुबे सर ने स्वयं में कुछ परिवर्तन करके अपने को एक नए अंदाज में प्रस्तुत किया, जिसे सभी छात्रों ने हर्ष के साथ स्वीकारा और वे छात्रों के दिल तक का रास्ता बनाने में सफल रहे | इस महत्वपूर्ण परिवर्तन के पीछे शुभम भैया का काफी योगदान रहा।

मुझे सभी अध्यापक एवं अध्यापिकाएं काफी अच्छे लगे किंतु रुचिरा मैम जी तथा दुबे सर जी से मेरा खासा लगाव बना रहा | एक अलग रिश्ता बन गया। रुचिरा मैम जी मुझे एक मां के रूप प्राप्त हुई तथा दुबे सर जी में मैंने अपने दादाजी को खोजा। आप सभी का स्नेह आशीष मुझे समय-समय पर प्राप्त हुआ। ऐसे ही स्नेह आशीष आप सभी सदा मुझ पर बनाए रखें।

अब मैं छात्र कार्यकारिणी, साहित्य संगम का अध्यक्ष बन चुका हूं। " कार्यकाल अभी जारी है,कुछ नया करने की तैयारी है।" मैंने दुबे सर के साथ काफी नए कार्यक्रम करवाए, जिससे मुझे नए नए अनुभव प्राप्त हुए, "यह सिलसिला यूं ही चलता रहेगा सदा, चाहे दुनिया हमारा साथ दे या रहे हम से जुदा, यह सिलसिला चलता रहेगा यूं ही सदा"।

अधूरा मैं अधूरी यादें, बिखरता मैं बिखरती यादें,

सवरता मैं सवरती यादें, चलता मैं हूं चलती यादें,

कुछ खट्टी कुछ मीठी यादें, मुझे रुलाने वाली यादें,

www.fromoldbooks.org

मुझे हंसाने वाली यादें, यादों की यादों में यादें,

यादों के भवर में हूं मैं, मचलता हूं सभंलता हूं मैं ।

शिवाजी कॉलेज के सभी शिक्षक गणों का विशेष आभार, मेरे सभी साथियों का आभार | आप सभी के साथ बिताए, यह 3 वर्ष मेरे जीवन के स्वर्णिम पलों में से एक रहेंगे। हमारे विभाग के शिक्षक गण ज्ञान के सागर है और हम उनकी एक ज्ञानरूपी बूंद के प्यासे हैं। यह प्यास तो नहीं बुझी है और नहीं बुझेगी। आप सभी शिक्षक गणों का आशीष बना रहे, सभी साथियों का साथ कभी ना छूटे ऐसी ईश्वर से कामना है मेरी।

"जैसे-जैसे विदाई के दिन नजदीक आए, आंखों में मेरे सैलाब भर लाए"

मैं आशुतोष सिंह एक हवा के झोंके की तरह आया था, अब कुछ दिनों में धुआं हो जाऊंगा पर याद बहुत आऊंगा, आप सभी को याद बहुत करूंगा।

दो पल का था ये यादों का कारवां और फिर चल दिए हम यहां से जाने कहां...जाने कहां.... जाने कहां.....।

धन्यवाद आप सभी का,

साहित्य संगम, हिंदी विभाग

(शिवाजी महाविद्यालय)

www.fromoldbooks.org

(लेखन-काव्य संग्रह)

उजाला क्यों आता नहीं है?

ये अंधेरा क्यों जाता नहीं है भाई, ये उजाला क्यों आता नहीं है भाई।

ये अंधेरा क्यों छंटता नहीं है भाई, ये उजाला क्यों आता नहीं है भाई।

यह समय कैसा है भाई? जिधर देखो उधर तबाही मचाई, जिधर देखो उधर तबाही मचाई।

कहीं सांसों का अकाल है, कहीं बेड़ों का आकाल है,

कहीं डॉक्टरों की कमी है, कहीं प्रशासन निकम्मी है,

कहीं लोग तड़पते दिखते हैं, कहीं परिवार बिखरते दिखते हैं,

कहीं सांस उखड़ते दिखते हैं, कहीं प्राण निकलते दिखते हैं,

कहीं सरकार निकम्मी दिखती है, कहीं आरोप प्रत्यारोप करती दिखती है,

कहीं सिस्टम की लाचारी है, कहीं सिस्टम की बदहाली है,

कहीं नौकरशाह फरार हैं, कहीं सारा तंत्र फटेहाल है,

ना जाने कैसी बीमारी आई है? जिसने हर तरफ तबाही मचाई है,

आज लोग हुए बीमार, बेबस और लाचार है,

कहीं लोग बिलखते दिखते हैं, कहीं मरीजों को लेकर भटकते दिखते हैं,

www.fromoldbooks.org

कहीं सांसों का अकाल है, कहीं सांसो पे आकाल है,

यह कैसा आया काल है भाई, जिधर देखो उधर सब बेहाल है भाई,

यह समय बड़ा विकराल है भाई, जिधर देखो उधर आया काल है भाई,

जिधर देखो उधर आया काल है भाई।

जिधर देखो उधर धुआं ही धुआं, इस धुएं में सारा जहां है, जिधर देखो उधर धुआं ही धुआं.....|

www.fromoldbooks.org

समय पर सारा काम करो।

प्रातः जल्दी उठने का काम करो, नित्य क्रिया सुबह शाम करो,

जाओ तुम स्नान करो, थोड़ा ईश्वर का ध्यान करो,

फिर तुम जलपान करो, थोड़ा सा विश्राम करो,

जल्दी-जल्दी सारा काम करो, जल्दी-जल्दी सारा काम करो।

पठन कार्य आरंभ करो, रोज समयानुसार करो।

समय पर सारा काम करो, काम बिना विश्राम करो,

मेहनत सुबह शाम करो, काम बिना आराम करो,

तुम भी पढ़ो और पढ़ाओ, जग में ज्ञान की गंगा बहाओ,

अंधकार को दूर भगाओ, ज्ञान रूपी प्रकाश जगाओ,

तुम भी पढ़ो और पढ़ाओ, जोत से जोत जगाते जाओ,

आगे बढ़ो बढ़ते जाओ, देश दुनिया में नाम कमाओ,

अपना और देश का नाम कर जाओ, कुछ ऐसा काम कर जाओ।

मेहनत करने से तुम ना घबराओ, मेहनत करने से तुम ना कतराओ।

सफलता की कुंजी है मेहनत, सफलता की पुंजी है मेहनत।

विपदाओं से ना घबराओ, बाधाओं को पार कर जाओ।

बड़ों का आदर मान करो, गुरुओं का सम्मान करो।

www.fromoldbooks.org

प्रातः जल्दी उठने का काम करो, नित्य क्रिया सुबह शाम करो।

समय पर सारा काम करो, काम बिना आराम करो।

नित्य क्रिया सुबह शाम करो, प्रातः जल्दी उठने का काम करो, प्रातः जल्दी उठने का काम करो.....।

www.fromoldbooks.org

चोर आए

चोर आए सज के, सवर के, धवर के..

चोर आए सज के, सवर के, धवर के,

राक्षसी हंसी-हंसे ही-ही हूं-हूं करके,

चोर आए सज के, धज के, सवर के।

बड़ी-बड़ी गाड़ियों में घूमे राजा बनके,

जनता के पैसा पर मौज करे तन के,

चोर आए सज के, सवर के, धवर के,

कहो चोर तुम कैसे आए????

क्या संदेशा जनता का लाए????

पहले बताओ! इत्ता देर से क्यों आए?

चोर आए सज के, धज के, सवर के,

राक्षसी हंसी-हंसे ही- ही हूं -हूं करके...

चोर आए सज के, सवर के, धवर के...

टूटी नालियां सड़क बेकार,

विकास कि नहीं कोई बयार,

www.fromoldbooks.org

क्या यही है बदलाव??

करते हो दाबा छाती चौड़ी करके,

चोर आए सज के, सवर के, धवर के,

राक्षसी हंसी हंसे ही-ही हूं-हूं करके....।

चोर आए सज के, सवर के, धवर के

चापलूस गिरे पैरों में राम-राम करके,

पाहुन आए सज के, सवर के, धवर के,

मीठी-मीठी हंसी हंसे ही-ही हूं-हूं करके।

पाहुन आए सज के, सवर के, धवर के,

चापलूस पीटे मृदंग धूम धराम करके,

स्वागत करें फूलों की माला से राम-राम करके,

पाहुन आए सज के, सवर के, धवर के ,

मीठी मीठी हंसी हंसे ही-ही हूं-हूं करके...।

चोर आए सज के, सवर के, धवर के,

पाहुन आए सज के, सवर के, धवर के,

राक्षसी हंसी हंसे ही- ही हूं- हूं करके,

मीठी-मीठी हंसी हंसे ही- ही हूं -हूं करके।

www.fromoldbooks.org

(गीत संग्रह)

मोए श्याम से मिला दे

राधे-राधे राधे ए..., राधे-राधे राधे ए...

मुझे श्याम से मिला दे,

राधे-राधे राधे ,मोहे श्याम से मिला दे....

श्याम भजन मे मन मगन है, कैसे कहूं कितना मगन है-२

मुझे श्याम से मिला दे राधे -राधे.....

राधे-राधे राधे ए.... मुझे श्याम से मिला दे।

जाने कहां श्याम मेरे हैं, दर्शन नहीं देते मुझे है?

कैसे मैं उनको पाऊं राधे -राधे, कोई उपाय मिला दे राधे- राधे?

राधे-राधे राधे मुझे श्याम से मिला दे, राधे- राधे राधे मोहे श्याम से मिला दे।

श्याम को मैं दिल से पुकारू, श्याम को मैं मन से पुकारो,

जाने कहां छुपे बैठे हैं, दर्शन नहीं देते मुझे है...?

कोई उपाय दर्शन करा दे, राधे-राधे,

राधे- राधे राधे मुझे श्याम से मिला दे...-२।

श्याम की याद में पल पल, ये दिल रोता है,

बिन जागे ना जाने, क्यों ये सोता है?

www.fromoldbooks.org

अक्सर श्याम को ये दिल पुकारे, ना जोर मन पर चले राधे-राधे राधे....ए, मुझे श्याम से मिला दे-२।

मन में नहीं, दिल में नहीं है, जाने कहां कृष्ण मेरे हैं-२??

मोए तू उनसे मिला दे.. राधे- राधे मोहे कन्हैया से मिला दे... राधे-राधे... २

राधे राधे राधे....ए, मोहे श्याम से मिला दे...

www.fromoldbooks.org

व्यंग्य गीत

"राम जी को याद करूं"

राम जी को याद करू, उनसे फरियाद करू,

अच्छे दिन हमको ला दो ओ रामा.....

राम जी को याद करू, उनसे फरियाद करूं,

अच्छे दिन हमको ला दो ओ रामा....

मुझे रोजगार दिला दो.... ओ रामा, अच्छे दिन हमको दिखा दो ओ रामा....

रोज रोज बढ़ती हुई ये महंगाई,

रोज रोज बढ़ती हुई ये महंगाई,

सुनके ना नींद नाहीं चैन आए.... ना चैन आए....

गैस के दाम बढ़े -डीजल के दाम बढ़े,

पेट्रोल 100 के पार हुआ है ओ रामा....

गरीबों का हाल बुरा है ओ रामा.... गरीब बदहाल हुआ है ओ रामा....

भक्तों की भक्ति ने क्या दिन दिखाएं?

भक्तों की भक्ति ने क्या दिन दिखाएं?

महंगाई की मार रोज आम जन खाए...ओ रामा मेरे

दुख हरो रामा- दुख हरो रामा....

www.fromoldbooks.org

अर्थव्यवस्था डूबा दिए, वादे सारे तोड़ दिए,

कैसा बुरा हाल किया है ओ रामा....

देश का हाल बुरा है मेरे रामा.... देश कंगाल हुआ है ओ रामा- ओ रामा

दुख हरो रामा, दुख हरो रामा...

आशु तेरे समय की उल्टी देखी रीत...-२

अनपढ़ मिलकर राज करें, पढ़े-लिखे मांगे भीख

आशु तेरे समय की कैसी दिखी रीत??

नजरें तरस गई आंखें बरस गई, मुझे दीदार करा दो

अच्छे दिन मुझको दिखा दो ओ रामा...

हमें रोजगार दिला दो ओ रामा...मेरे रामा...कृपा करो रामा...

कष्ट हरो रामा मेरे रामा....

बीजेपी जीता कर र... यूं जी रहा हूं...

जैसे जहर कोई पी रहा हूं,

क्यों जी रहा हूं-क्यों जी रहा हूं, जैसे जहर कोई पी रहा हूं-हां पी रहा हूं क्यों जी रहा हूं.....

वादा सारा तोड़ दीया, देश को बेच दिया,

प्राइवेटाइजेशन किया है ओ रामा देश को बोर दिया है ओ रामा...

www.fromoldbooks.org

उद्योगपति तार दिए हैं ओ रामा मेरे रामा.... कल्याण करो रामा.... मेरे रामा...

बेचत बेचत मैं चला, उपाय बचा न कोए...-2

कैसे उठानी अर्थव्यवस्था, मोए बता दे कोए...-2

कैसे बुरा हाल किया है, गरीबों का हाल बुरा है ओ रामा... मेरे रामा...

राम जी को याद करूं, उनसे फरियाद करूं,

मुझे रोजगार दिला दो ओ रामा- अच्छे दिन हमको दिखा दो ओ रामा....

अच्छे दिन मुझको दिखा...ओ रामा.... मेरे रामा-प्रभु रामा.... कल्याण करो रामा....

दुख हरे रामा...मेरे रामा.... हम सबके रामा...

www.fromoldbooks.org

गीत

जाना था गांव

दिल के अरमां आंसुओं में बह गए...हम गांव जाते जाते अब रह गए..
दिल के अरमां आंसुओं में बह गए...-२

ऐसा क्या हमसे खफा तू है खुदा, ऐसा क्या हमसे खफा तू है खुदा...जाते-जाते गांव अब हम रह गए..... दिल के अरमां आंसुओं में बह गए....-२

जाना था हमको गांव ये तय हुआ, जाना था हमको गांव ये प्लान बना,

दिल्ली में है-दिल्ली में हम रह गए, दिल्ली में है-दिल्ली में हम फंस गए, जाते-जाते गांव अब हम रह गए-२।

बहुत याद आती है हमको गांव की..., बहुत याद सताती है हमको गांव की..., जाते-जाते गांव अब हम रह गए.... दिल के अरमां दिल में ही अब रह गए, दिल के अरमां आंसुओं में बह गए..२।

खेत खलिहान नींदों में आते हैं, गैया हमारी हमें स्वप्न में बुलाती है, आओ बाबू आओ कहां तुम रह गए, दिल के अरमां आंसुओं में बह गए, हम गांव जाते जाते अब रह गए, दिल के अरमां आंसुओं में बह गए...-२।

ऐसा क्या मुझसे खफा तू है खुदा, ऐसा क्या गलती किया मैंने खुदा? जिसकी अब मुझको सजा ये मिल रही, जिसकी अब मुझको सजा ये

www.fromoldbooks.org

मिल रही, हम गांव जाते जाते अब रह गए दिल के अरमां आंसुओं में बह गए... -२।

खुद को भी मैंने संभाले रखा मगर.. खुद को भी मैंने संभाले रखा मगर, फासले जो दरमियां थे रह गए, दिल के अरमां आंसुओं में बह गए, दिल के अरमां आंसुओं में धूल गए, दिल के अरमां आंसुओं में बह गए।

आशुतोष सिंह
हिंदी विशेष ,शिवाजी कॉलेज

www.fromoldbooks.org

अतीत

अर्जुन

महाविद्यालय अनुभव किसी व्यक्ति के जीवन का सबसे उल्लेखनीय और प्यारा समय होता है। विद्यालय जीवन के विपरीत महाविद्यालय जीवन का एक अलग अनुभव होता है और एक व्यक्ति को अपने जीवन में इस अनुभव की आवश्यकता होती है यह हमें उन नए अनुभवों से रूबरू कराती है जिन्हें हम हमेशा अपने स्कूली जीवन के बाद अनुभव करने का सपना देखते हैं। भाग्यशाली वे होते हैं जिन्हें अपने कॉलेज जीवन का आनंद लेने का मौका मिलता है क्योंकि बहुत से लोगों को यह मौका उनके परिस्थिति के कारण नहीं मिलता है। हर व्यक्ति के लिए इसका एक अलग अर्थ होता है जहां कुछ लोग दोस्तों के साथ पार्टी करके अपनी कॉलेज लाइफ बिताते वहीं कुछ लोग अपने भविष्य को लेकर ज्यादा सतर्क हो जाते हैं और मेहनत से पढ़ाई करते हैं। जो भी हो, हर व्यक्ति अपने कॉलेज जीवन का आनंद लेता है और हमेशा उस समय को समाप्त होने के बाद फिर से जीना चाहता है।

विद्यालय जीवन और कॉलेज दोनों ही किसी व्यक्ति के जीवन का सबसे यादगार समय होता है लेकिन दोनों एक-दूसरे से काफी अलग होते हैं विद्यालय जीवन में हम सब कुछ एक संरक्षित वातावरण में सीखते हैं। महाविद्यालय जीवन हमें एक नए वातावरण में उजागर करता है जहां हमे नई चीजें सीखनी होती है और नई चुनौतियों का

www.fromoldbooks.org

सामना खुद करना पड़ता है। हम अपने युवा जीवन का आधा हिस्सा विद्यालय में बिताते हैं और इस तरह हम उस माहौल में आराम से रहते हैं। लेकिन कॉलेज लाइफ 3 वर्षों के लिए होती है, जहां हर साल हमारे लिए नई चुनौतियां और सबक लेकर आता है।

स्कूली जीवन के विपरीत कॉलेज जीवन में हमारी कोई सीमाएं नहीं होती है और यह हम पर निर्भर करता है की हम अपना महाविद्यालय जीवन कैसे व्यतीत करना चाहते हैं। कॉलेज लाइफ में हम नए चेहरे देखते हैं और एक अनोखे माहौल का अनुभव करते हैं जिसमें हमें खुद से घुलना- मिलना होता है। हम वहां नए मित्र बनाते हैं जो जीवन भर हमारे साथ रहते हैं। साथी हमें सही निर्णय लेने और कठिन अध्ययन करके अपने करियर को आकार देने का मौका मिलता है। कॉलेज जीवन केवल अध्ययन के बारे में ही नहीं बल्कि विभिन्न गतिविधियों और चुनौतियों के माध्यम से व्यक्ति के समग्र विकास के बारे में भी है।

कॉलेज लाइफ में व्यक्ति को अपने फैसले खुद लेने का मौका मिलता है। स्कूली जीवन में छात्रों को क्लास मॉनिटर बनने का मौका मिलता है, जबकि कॉलेज लाइफ में एक व्यक्ति को कॉलेज के अध्यक्ष उपाध्यक्ष और पदों के लिए खुद को नामांकित करने का मौका मिलता है। पाठ्यक्रम और धारा तय करने के अलावा एक व्यक्ति को पूरे वर्ष होने वाले विभिन्न समाज और आयोजनों का हिस्सा बनकर अपने आत्मविश्वास को बढ़ाने का मौका मिलता है।

www.fromoldbooks.org

विद्यालय जीवन से अलग ,महाविद्यालय जीवन का एक व्यक्ति के जीवन में अपना महत्व और व्यक्ति को जरूर अपने कॉलेज जीवन का आनंद लेना चाहिए।

3 वर्ष पीछे जाने का प्रयास करूंगा।

सन् 2019 मेरा शिवाजी महाविद्यालय में कदम रखना और तब से आज वर्तमान समय तक इन ढाई वर्षो में जितनी स्मृतियां बनाई है, "उससे पूर्व 18 वर्षों की यादों से कई गुना अधिक।" एक महाविद्यालय का उद्देश्य छात्रों को किसी विशेष विषय में दक्ष बनाने तक ही सीमित नहीं रहता मेरे अनुभव में इस स्थान पर प्रत्येक विद्यार्थी अपने जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा जो निसंदेह ही 3 वर्षों की एक लंबी समयावधि होती है कुछ महत्वपूर्ण संगियो के संग व्यतीत करता है। इन चंद वर्षों में मुझे भी कुछ नमूने मिले और उनकी चर्चा बाद में पहले महानुभावों का जिक्र करूंगा जिन्हें शायद कोई प्रतिस्थापित नहीं कर सकता। शुरुआत करते हैं रुचिरा मैम से मुझे अनुशासित करने में इनका सबसे बड़ा योगदान रहा। इनका प्रभावशाली व्यक्तित्व जीवन के अनेक आधारभूत सिद्धांतों को व्यक्त कर देता है। व्यक्तित्व की बात कर ही रहा हूं तो श्रीमान दर्शन सर की बात तो करनी ही पड़ेगी बिना किसी द्वितीय विचार के मैं हिंदी क्षेत्र में सर्व ज्ञानी की संज्ञा दे सकता हूं। मुंह जबानी रचनाओ को याद करने की प्रेरणा इन्हीं से मिली। प्रेरणा से याद आया कंचन मैम और अरविंदर मैम के समझाने का तरीका सभी विद्यार्थियों को याद रहने वाला है।

मैं शायद भाग्यशाली रहा कि मुझे परवीन मैम, सरिता मैम और साथ ही विकास सर और वीरेंद्र सर से पढ़ने का भी मौका मिला। यह ऐसे

www.fromoldbooks.org

शिक्षक है जो कठिन से कठिन विषय को सरलता के समानांतर लाकर खड़ा कर दें। सफलतापूर्वक ज्ञान संप्रेषित करने के उद्देश्य से विद्यार्थी के स्तर तक आने की कला तो कोई वीरेंद्र सर से सीखे।

अब तक मैंने जो भी व्यक्त किया है उसमें केसर मात्र भी अतिशयोक्ति नहीं है। मैं अक्सर शांत, समक्ष हूं बारीकी के साथ सत्य लिखने में।

मुझ पर सबसे अधिक प्रभाव श्रीमान तरुण सर का रहा। वह मुझे हमेशा सच्चाई के निकट लगे। वह विद्यार्थी के समक्ष किसी आईने के समान उनकी अच्छी और कम अच्छी विशेषताओं को प्रतिबिंबित करते हैं।

इसके अतिरिक्त मैं विभिन्न कॉलेज सोसाइटी का भी भाग रहा। मेरी रुचि अनुसार मैं साहित्य से संबंधित "लिट्सोक" के साथ-साथ "वूमेन डेवलपमेंट सेल" जैसी इनफॉर्मेटिव सोसाइटी से जुड़ा जहां मैंने कई चीजें सीखी।

एक और चीज जो मुझे अपने महाविद्यालय जीवन के बारे में पसंद है वह है वार्षिक उत्सव। प्रत्येक वर्ष दिल्ली विश्वविद्यालय का हर कॉलेज एक वार्षिक उत्सव का आयोजन करता है जो दो-तीन दिनों की अवधि तक चलता है। इस वार्षिक उत्सव में, विभिन्न प्रतियोगिताएं होती हैं और विभिन्न कॉलेजों के छात्र इस वार्षिक उत्सव का हिस्सा बनने के लिए आते हैं। मैं भाग्यशाली रहा कि मुझे भी एक बार ही सही "कॉलेज फेस्ट" का हिस्सा बनने का अवसर मिला। यह फेस्ट छात्रों को नए लोगों के साथ मेलजोल करने और अपनी प्रतिभा को सभी के सामने प्रदर्शित करने की अनुमति देते हैं

www.fromoldbooks.org

जो उनके आत्मविश्वास का निर्माण करते हैं और उनके भविष्य में उनकी मदद करता है। मैंने अपने कॉलेज के वार्षिक उत्सव में सभी 3 वर्षों में भाग लिया है और मुझे इस उत्सव के माध्यम से अपने जीवन का सबसे अच्छा और बढ़िया अनुभव मिला हैं|

P.S. राहुल और हिमांशी यह दो बस काफी रहे मेरे लिए। इनके साथ में सभी विषमताओं को निरर्थक बना दिया।

www.fromoldbooks.org

सोम -काव्य संग्रह

एक अनजानी सी खुशी

रास आती है नजरों को

यह नजरें ढूंढ रही है

अंधेरे में साये को

वही जो दिखता नहीं

पर है ठीक सामने

ठीक उस पार

वही आएगा थामने

उसी परछाई की तरह

लगता है कि हो कहीं गुम

जानता हूं कि क्या नहीं

रात हूं में अंधेरा हो तुम।

www.fromoldbooks.org

उसका होना

सब पत्थर हो गया है।

शब पत्थर हो गया है

यह रात भी है ही काली

और उसकी जुल्फें

एक ख्वाहिश की जरूरत

तो प्यार ही क्यों मांगा?

रोशनदान था खाली

और उसकी आंखें

उथला सा समुंदर

सिकुड़ा सा ब्रह्मांड

दुनिया भी सीमित

और उसका चेहरा

फीका सा अस्तित्व

साए में लीन

प्रतिबिंब में धुआं, और उसका स्पर्श

www.fromoldbooks.org

जिंदगी की कहानी

हर लमहे में हकीकत

जिंदा भी तो है रहना

और उसका होना।

www.fromoldbooks.org

ये मुस्कान

रंग नीला और आसमान

प्रेम मुकद्दस सरीखा अजान

आशा है सरल पर उलझे हैं अरमान

साथ हूं तेरे ना कोई एहसान

मचला था मचलता हूं मचलता रहूंगा

मान या ना मान

सारी दुनिया से बेहतर है तेरी यह मुस्कान

ज़मी से आसमां तक

तिनके से जहां तक

अमावस का वो अंधेरा

और पूर्णिमा के चांद तक

कांटो से फूलों तक

बचपन के उन झूलों तक

हरकतों से उसूलों तक

अंतिम पत्ती से उन मूलों तक

कुछ है जो कहलाती है दूरी

www.fromoldbooks.org

कौन कहता है उसकी रचना रह गई अधूरी

उन कहने वालों को झूठ का देती है प्रमाण

सारी कथनी से बेहतर है तेरी ये मुस्कान

ना जाना कभी था कि जाना कहां है

ना जाना कभी के वो रास्ता कहां है

कोई दवा तो नहीं लगा मर्ज है मदिरा पान

आक्समक ही तेरी हल्की सी झलक ने कहा

भली मदीरा से भी नशीली है तेरी ये मुस्कान

जैसे रात की मंजिल दिन के उजाले में दिखती है

तेरे आने की आहट जर्रे जर्रे में महकती है

यह मैं हूं या मेरा प्यार जो कहने भर से उजागर है

वरना इसकी तासीर तो गुमशुदा रहने में दमकती है

मैंने कहा था मेरा साथ नहीं है कोई एहसान

बस चाहता हूं कि मिले तुझे एक इंसान

वही बनने का प्रयास, हर पल मुझे दे फरमान

इंसानियत से भी बेहतर है, तेरी ये मुस्कान

अर्जुन कुमार, हिंदी विशेष ,शिवाजी कॉलेज

www.fromoldbooks.org

बीत गए वो अच्छे पल

मुकेश शर्मा

यह उन दिनों की बात थी जब हमारा आखिरी दिन था स्कूल का हम दोस्तों ने पहले सोचा था कि हम सब कॉलेज जाएंगे वहां जाकर बहुत मस्ती करेंगे, घूमेंगे, खूब सारी बातें करेंगे, और बहुत कुछ हम सब दोस्तों ने सोचा था और यहां तक सोच रखा था कि साथ साथ रहेंगे पर हम साथ नहीं रह सके। हम लोगों की जिंदगी बिल्कुल अलग सी हो गई जो सोचा था वैसा कुछ भी नहीं हुआ। कॉलेज जो हमने सोचा था वैसा तो बिल्कुल भी मिलता-जुलता नहीं था मुझे आज भी याद है वह मेरा कॉलेज का पहला दिन जब मेरा दाखिला होने वाला था।

मुझे कुछ भी पता नहीं चल पा रहा था कि मैं कहां जा रहा हूं कुछ समझ नहीं आ रहा था लग रहा था मुझे इस कॉलेज में दाखिला मिलेगा भी या नहीं | इस बारे में सोच कर मैं चिंतित था मुझे दाखिला मिल तो गया पर फिर भी मुझे विश्वास नहीं हुआ कि मैं कल से कॉलेज जाने वाला हूं मैं तो बहुत ही उत्साहित था कॉलेज जाने के लिए और सुबह सुबह ही मैं कॉलेज पहुंच गया था मुझे तो मेरी क्लास भी नहीं पता थी मुझे तो कंचन मैम ने बताया कि मेरी क्लास कहां है शुरुआत के कुछ दिन तो मुझे कॉलेज को जानने और समझने में ही निकल गया मैं तो पूरे कॉलेज में घूमा करता था कि कौन सी चीज कहां है।

www.fromoldbooks.org

पहले पहले ही दिन जब कुछ नए दोस्त मैंने बनाए थे हम सब साथ साथ रहा करते थे उनका साथ मेरे लिए बहुत कुछ था और उनके होने से मुझे कभी भी कॉलेज में अनजान होने का एहसास नहीं हुआ।

मेरे लिए यह सब एक परिवार है जो हमेशा मेरे साथ रहेंगे मेरी यादों में मुझे तो वह दिन भी याद आते हैं जब हम कॉलेज के दिनों में मजे किया करते थे जब हमको खाली समय मिला करता तो तब हम घूमने जाते थे हम कॉलेज से बाहर जाकर अपने मनपसंद जगह पर घूम कर आते थे एक बार तो हमको देर हो गई थी घूम कर कॉलेज आने में तो हम सभी दोस्त ने मैडम से झूठ बोला था।

मेरे ख्याल से तो कॉलेज एक ऐसी जगह है जहां हम बहुत कुछ सीखते हैं क्योंकि यह वह उम्र का दौर होता है जहां हम को कुछ ना कुछ खोना और कुछ ना कुछ कमाना पड़ता है। मैंने अपने स्कूल के सभी दोस्तों को खो दिया था और सब सारी पुरानी यादों को याद करते हुए नए यादें बनाए थे। कॉलेज के अध्यापक भी मुझे अपने स्कूल की तरह लगने लगे थे उनसे कुछ भी पूछो हर बात बता देना और कभी मना नहीं करना। मुझे कॉलेज के सभी अध्यापक बहुत अच्छे लगते थे क्योंकि मेरा उनके साथ एक ऐसा रिश्ता जुड़ गया था कि क्या बताऊं सभी क्लास में उनके आने का इंतजार रहता था हमारे हिंदी विभाग के सभी अध्यापक बहुत ही अच्छे हैं उन्होंने हमेशा मेरी मदद की है और करते रहते हैं

मेरा अनुभव उतना खास नहीं रहा पर जितने भी दिन बीते वह इतने अच्छे थे कि उनको भुलाए भी नहीं भूला जा सकता आज कॉलेज के तीसरे वर्ष में आने के बाद मुझे यह सब बातें याद करके बहुत दुख

www.fromoldbooks.org

होता है कि कुछ 6-7 महीने जो दोस्त के साथ बिताए बाकी का समय कोरोनावायरस के कारण सिर्फ एक लम्हे की तरह गुजर गया मुझे हमेशा से दुख रहेगा इस बात का कि मुझे कम समय मिला उनके साथ अत: मैं सब का आभार व्यक्त करता हूं कि कॉलेज के दिनों को इतना खास बनाया। मेरे सभी अध्यापकगण, दोस्त, कॉलेज स्टाफ आदि मेरा आप सभी से बहुत अच्छा रिश्ता और यादें हैं मैं सबको हमेशा हमेशा के लिए अपनी यादों में रखूंगा |

धन्यवाद

www.fromoldbooks.org

वो पल!

अनजानी गलियों में भी, मैं खुद को कभी

अनजान ना पाऊं।

ढूंढा जब भी किसी अपने को,

तो दोस्तों का झुंड पाऊं।

घनी अंधेरी रात सी लगे वह गलियां,

जब किसी अपने को अपने पास ना पाऊं।

खुशी से झूम सा जाऊ, जब जब

दोस्तों के साथ घूमने जाऊ।

नए सिरे से सीखा सब कुछ,

पुरानी बातें भी याद आती उनको मैं क्यों भूल जाऊं।

बिछड़ गए वह पुराने दोस्त,

चाह कर भी उनको भुला ना पाऊं।

अब नए दोस्त बन गए हैं उनको

ही अपने दिल की सारी बात बताऊ।

कॉलेज मेरी नई दुनिया सी,

जिसे मैं अब अपनी यादों में बसाऊ।

वह अच्छे दिनों के कुछ हसीन पल,

जिसे चाह कर भी भूल ना पाऊं।

www.fromoldbooks.org

एक गरीब

नादान परिंदे है वह अनजान किस्से से,

हर वक्त लड़ते हैं वह अपनी गरीब जिंदगी से।

तरसना बन गई है उनकी आदत,

मजबूरी सहना उनकी जरूरत।

चैन से सो तो जाते हैं वह भूल कर सारी बातें

खुश नहीं होते फिर भी खुश सबके साथ होते।

एक एक खुशी के लिए तड़प उठती है,

किसे कहे वह जाकर अपनी बात उनकी मुराद कहां पूरी होती है।

खिलौना बेचते हैं वह पर खेलने को नहीं मिलता है,

मां और बापू का वह भी हाथ बटांते हैं।

छोटे हाथों में बहुत से जिम्मेदारी संभाला करते हैं,

दुखों को छुपाने के लिए वह रोते हुए हंसते हैं।

www.fromoldbooks.org

बीत गया वो बचपन...

देख आज एक बच्चे को, मैं हो गया बचपन में गुम।

याद आया वह सब फिर, जो बीत गए थे बचपन के दिन।

हंसता मुस्कुराता हुआ, गुजरता था मेरा भी पूरा दिन।

मां- मां की दिनभर, मैं भी था रट लगाता।

सुबह मेरी थी, और रात को भी था अपनी ही चलाता।

ना कुछ पाने की चाह थी, ना कुछ खोने का था डर सताता।

भूलकर सब कुछ, सिर्फ मैं अपनी दुनिया था सजाता।

भूख लगे तो खाना खाता, नींद जो आए तो था मैं सो जाता।

बचपन में रोज नए सपने देख कर, कुछ वैसा ही था बनना चाहता।

रोज मस्ती नई वाली करना, काम मेरा था बन जाता।

जिस दिन ना करूं परेशान किसी को, ठीक हूं ना मैं... यह सवाल था पूछा जाता।

बचपन के दिनों में पापा को देख, बड़ा होना चाहता।

जब बीत गए यह बचपन के दिन, तो अब याद करके आंसू बहाता।

क्यों बीत गए वह बचपन के दिन, मैं उनको फिर से जीना चाहता।

मुकेश

शिवाजी कॉलेज

www.fromoldbooks.org

कॉलेज के स्वर्ण पल

गौरव यादव

कॉलेज लाइफ हर एक विद्यार्थी के जीवन का स्वर्ण युग होता है इसी सोच को अपने आप में आत्मसात करते हुए मैंने भी निर्णय लिया कि मैं भी दिल्ली विश्वविद्यालय से अपनी आगे की पढ़ाई को जारी रखूंगा।

उस समय यह नहीं सोचा था कि मैं शिवाजी कॉलेज में ही एडमिशन लूंगा मेरे अंकों के आधार पर मैं शिवाजी कॉलेज में एडमिशन लेते समय साथ ही जब मैंने अपनी रुचि के विषय को परखा तो मुझे पता चला मेरा जो प्रिय विषय है राजनीति विज्ञान और हिंदी है परंतु अपना आत्म विश्लेषण करने के पश्चात मुझे एहसास हुआ कि मेरे लिए हिंदी विशेष चुनना ही उचित होगा आत्म विश्लेषण के दौरान मैंने ग्रेजुएशन के बाद अपने स्कोप को भी ध्यान में रखा साथ में अपनी रुचि का स्तर किस में अत्याधिक है देखा इसके अलावा कई और विभिन्न प्रकार के पैमानों को ध्यान में रखते हुए मैंने हिंदी ऑनर्स विषय को चुना।

12वीं तक की शिक्षा एक सरकारी स्कूल से पूर्ण करने के पश्चात पहली बार में एक अलग ही प्रकार के शैक्षिक माहौल में स्थानांतरित हो रहा था क्योंकि कॉलेज में जो सुविधाएं हमें मिली थी वह विद्यालय में उपलब्ध नहीं थी। जिस समय हम कॉलेज में एडमिशन लेने के लिए गए थे उस समय हम में एक अलग ही प्रकार का जोश उमंग और ऊर्जा थी जो कि स्वाभाविक तौर पर होनी भी चाहिए। जब

www.fromoldbooks.org

पहली बार हमने अपने कॉलेज को देखा तो कॉलेज की वह बड़ी-बड़ी इमारतें, कॉलेज की क्लासेस, कॉलेज की लाइब्रेरी, कैंटीन ,सी प्वाइंट इसके साथ ही बड़ा सा प्लेग्राउंड इसके अलावा विभिन्न प्रकार के पेड़ पौधे और एक व्यापक शैक्षिक माहौल। उस माहौल में हम अपने आपको मौजूद होते देख हमें एक सकारात्मक ऊर्जा का एहसास हुआ कॉलेज में हालांकि एडमिशन के समय मुझे कुछ शैक्षिक दस्तावेज उपलब्ध ना होने की वजह से एडमिशन लेते समय समस्याओं का सामना करना पड़ा था परंतु अंततः सफलतापूर्वक मेरा एडमिशन कॉलेज में हो गया।

जहां तक बात है कुछ खास और विशेष अनुभव का तो आपको पता ही है कि 2019-20 का समय कोरोनावायरस का प्रारंभिक वर्ष था उस समय कोरोना की बातें चर्चा का विषय थी धीरे-धीरे हमें सुनने को मिल रही थी। हमें क्या पता था कि यह बीमारी धीरे-धीरे एक वैश्विक महामारी का रूप ले लेगी और हमारे कॉलेज के 2 वर्षों को खराब कर देगी। इसी वजह से हम ने अपने 3 साल की कॉलेज लाइफ में 6 सैमेस्टर में से सिर्फ एक सैमेस्टर की शिक्षा ही ऑफलाइन रूप से प्राप्त की उसके बाद यानी दूसरे सैमेस्टर से कोरोना का संकट अपने चरम बिंदु पर आने की वजह से लॉकडाउन लग गया | जिसकी वजह से हमारी ऑनलाइन माध्यम से शिक्षा शुरू हो गई और इसी प्रकार आगे के सभी सैमेस्टर ऑनलाइन मोड में हमने दिए इस कड़ी में कॉलेज के साथ-साथ अपने जीवन से जुड़ी अन्य गतिविधियों को आपके समक्ष पेश करना चाहूंगा कि मैं एक मध्यम परिवार से संबंधित हूँ | मेरे ऊपर ही सबकी महत्वाकांक्षा है। मेरे माता पिता ने

www.fromoldbooks.org

अपनी एक एक पाई जोड़ कर कॉलेज में आगे बढ़ने व पढ़ने को भेजा तथा निरंतर आगे बढ़ने का मौका दिया ताकि मैं किसी काबिल बन सकूं और भविष्य में किसी मुकाम तक पहुंच सकूं। मेरा सपना आईएएस बनने का है देश के प्रशासनिक ढांचे में ढलना और प्रशासनिक ढांचे के द्वारा अपने लिए इस समाज के लिए और अपने देश के लिए कुछ कर गुजरना है परंतु जैसा कि लोग कहते हैं कि ख्वाब भले ही बड़े हो लेकिन उस तक पहुंचने के लिए छोटे-छोटे ख्वाबों को पूरा करने की आकांक्षा रखो। कॉलेज में प्रथम वर्ष में कॉलेज की पढ़ाई के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए कोचिंग संस्थान से जुड़ा हुआ था और मैंने कॉलेज के प्रथम वर्ष में कॉलेज के साथ प्रतियोगिताओं के ऊपर भी पूर्ण रूप से समर्पित ध्यान दिया क्योंकि प्लान ए यूपीएससी क्रैक करना था। प्लान बी किसी भी प्रकार की प्रतियोगी परीक्षाओं पर भी ध्यान देना है । मेरी यादों में आज भी बसा हुआ वह जल्दी जल्दी घर से निकलना जल्दी बस मिलने की आकांक्षा, बस में धक्के ना खाने की इच्छा, कई बार कॉलेज लेट पहुंचने पर क्लासेस छूट जाने का डर। जल्दी शिक्षा समाप्त होने के बाद दोस्तों के साथ पार्को में टहलना, कैंटीन में ₹10 की आलू की पेटीज खाना क्योंकि इससे ज्यादा का बजट अपना होता ही नहीं था। क्योंकि मैं घर से सिर्फ ₹20 ही लाया करता था ₹10 किराए के लिए और कभी कबार आलू की पेटीज खाने के लिए खाली समय में मैं अपने दोस्तों के साथ सी प्वाइंट तो कभी ग्राउंड में तो कभी कैंटीन में खाना खाया करता था। खाना भी हम आपस में शेयर करते थे जिसको जो सब्जी अच्छी लगती थी वह अपने से उसकी सब्जी खा लेता था ग्राउंड हमेशा भरा भरा सा रहता था। उसमें हर

www.fromoldbooks.org

समय कोई ना कोई क्रिकेट मैच चल रहा होता था इसके अलावा कई खेल संबंधित गतिविधियां हमारे समय व्यतीत करने का साधन होती थी। इसके अलावा कॉलेज की कक्षाएं लेने के बाद खाली समय में कॉलेज के हवामहल में समय व्यतीत करना, लाइब्रेरी में अखबार पढ़ना हमारी दैनिक दिनचर्या होती थी | विभिन्न प्रकार के शिक्षक हमें मिले उन्होंने बहुत ही प्रेम और स्नेह प्रदान किया था हमने भी उनका आदर सम्मान भरपूर रूप से किया।

इसके अलावा कॉलेज में हर वर्ष विभिन्न प्रकार की सांस्कृतिक समितियों के ऑडिशन होते हैं इसी कड़ी में हमने भी ऑडिशन दिया मैंने लगभग हर प्रकार की सांस्कृतिक समितियों के ऑडिशन दिया अंततः शिवाजी कॉलेज की वाद-विवाद समिति डिक्टम टीम से जुड़े इस समिति में बहुत कुछ सीखने को मिला इस समिति में अपने व्यक्तित्व में रचनात्मक विकास को देखा।

वैसे कहने के लिए तो बहुत कुछ है परंतु अपने वक्तव्य को ज्यादा विस्तारित न करते हुए मैं यही कहना चाहूंगा कि कॉलेज का समय विद्यार्थी का स्वर्ण युग है और ऐसे समय में ना वह छोटा होता है ना ही वह बड़ा होता है इसी उम्र में उसके व्यक्तित्व का विकास व्यवस्थित रूप में होता है।

अंततः इस समय को पूर्ण रूप से इंजॉय करना चाहिए अपने कॉलेज की पढ़ाई के साथ-साथ अन्य सांस्कृतिक समितियों से भी जुड़ना चाहिए क्योंकि यह व्यक्तित्व निर्माण के लिए अति आवश्यक है साथ ही कॉलेज के प्रथम वर्ष में ही पूरी तरह से यह ठान कर आए की भविष्य में करना क्या है उसी अनुसार अपने कॉलेज की स्टडी की

www.fromoldbooks.org

दिशा निर्धारित करें यदि भविष्य में है आप संघ लोक सेवा आयोग प्रोफेसर या टीचर जैसे स्कोप निर्धारित किए हुए हैं तो आपका रुझान अभी से ही अपने कॉलेज की पढ़ाई पर विशेष रूप से होना चाहिए परंतु यदि आपने कॉलेज डिग्री हासिल करने के लिए किया है तो कॉलेज के साथ-साथ लक्ष्य पर भी ध्यान देना चाहिए जिसके कारण प्रिपरेशन कर रहे हैं | जिसमें 12वीं के बाद विभिन्न सरकारी नौकरियों के एग्जाम शामिल है कॉलेज में कोशिश करना की अपना फ्रेंड सर्कल अपनी ही तरह का हो लड़कियों से थोड़ा दूर रहे तो बेहतर है।

अपने शिक्षकों का मार्ग दर्शन अवश्य लेते रहे अंततः कुल मिलाकर कॉलेज खुलकर इंजॉय करें सभी प्रकार की गतिविधियों में अपना रुझान अवश्य रखें जितना कुछ कॉलेज से सीख सकते हैं पा सकते हैं सीखने का प्रयास करें अन्यथा में बस यही कहना चाहूंगा कि

- सफलता 1 दिन में नहीं मिलती लेकिन ठान लो तो एक दिन जरूर मिलती है।
  (गौरव यादव)
- सूर्य की तरह चमकना है तो पहले सूर्य की तरह जलना सीखो
  (अब्दुल कलाम)

www.fromoldbooks.org

आजाद भारत में भाषाई विषमता

आजाद भारत अथार्त स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात का भारत तथा भाषाई विषमता का अर्थ है भाषाओं में विभिन्नता अथार्त विविधता।

भारत का विविधता में एकता का सिद्धांत विश्व पटल पर भारत की पहचान है लगभग 200 वर्षों अंग्रेजों की गुलामी करने के पश्चात बड़े ही संघर्षों के बाद हमारे देश के क्रांतिकारियों तथा स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान त्याग तपस्या के द्वारा हमें स्वतंत्रता की प्राप्ति हुई स्वतंत्रता संग्राम में भी भाषा एक अहम जरिया बनी। देश की आजादी के लिए स्वतंत्रता सेनानियों को एक ऐसी भाषा चाहिए थी जो देश को एकत्रित करें जो भाषा हर धर्म जाति वर्ग लिंग के व्यक्ति को आती हो ताकि भारत एकात्मक और संगठित होकर देश की स्वतंत्रता में अपना योगदान दे अतः हम कह सकते हैं कि आजादी से पहले भी भारत में भाषा का एक अहम योगदान था।

परंतु स्वतंत्र भारत में भाषागत विषमता विवादित पहलू के रूप में उभरा इसके विभिन्न प्रारूपों को हम निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा समझने का प्रयत्न करेंगे:-

कारण :-

जब देश आजाद हुआ तब देश एक स्वतंत्र क्षेत्र था जो अभी पूर्ण रुप से एकत्रित और एकात्मक नहीं था इस कारण जब संविधान सभा में देश के अलग-अलग हिस्सों से आए प्रतिनिधियों के द्वारा भाषा

www.fromoldbooks.org

पर विचार विमर्श किया गया तो स्थिति विवादास्पद बनती चली गई क्योंकि हम जानते हैं कि हमारा देश विविधताओं से भरा है हमारे देश में कुछ ही दूरी तय करने पर भाषा और संस्कृति सब कुछ बदल जाती है। अतः जब संविधान सभा में इस बात पर विचार विमर्श हुआ कि देश की राष्ट्रभाषा क्या होनी चाहिए तो कोई भी एक ऐसी भाषा नहीं थी जो संपूर्ण देश का प्रतिनिधित्व करें यहां उत्तर भारत में हिंदी का प्रचलन अधिक था तो दक्षिण भारत में तमिल, तेलुगू, कन्नड़, मलयालम, मराठी जैसी भाषाएं प्रसिद्ध थे पूर्वी भारत में उड़िया बंगाली भाषा प्रचलित थी तथा पश्चिमी भारत में मराठी गुजराती इत्यादि भाषाएं इसी कारण से आज तक हमारे देश की कोई भी राष्ट्रभाषा संवैधानिक रूप में नहीं है लेकिन मौखिक रूप से हिंदी को देश की राष्ट्रभाषा माना जाता है वहीं संवैधानिक रूप में हिंदी को राजभाषा का दर्जा मिला।

आजादी के पश्चात भारत में राज्यों के गठन हेतु राज्य पुनर्गठन आयोग का निर्माण किया गया जिसका मुख्य उद्देश्य था भाषा तथा जनसंख्या के अनुसार राज्यों की सीमा का निर्धारण भाषा के आधार पर आंध्र प्रदेश देश का पहला राज्य बना इसका कारण यह भी है कि उस समय भाषाई आंदोलन का नेतृत्व करने वाले नेता पोट्टी श्रीरामलू के द्वारा आमरण अनशन धारण किया गया था तथा भाषाई आंदोलन के नेतृत्व को संभालते हुए उनकी मृत्यु हो गई जिस कारण आंध्र प्रदेश भाषाएं आधार पर पहला राज्य बना।

स्वतंत्र भारत में भाषाई विषमता एक प्रमुख विवादास्पद पहलू के रूप में उभरा क्योंकि आजादी के बाद देश का व्यापक जनसंख्या क्षेत्र भाषा

www.fromoldbooks.org

के आधार पर अपने राज्यों का गठन करना चाहते थे परंतु यदि हर एक विशेष वर्ग जाति धर्म लिंग भाषा के आधार पर एक अलग राज्य का गठन करता तो भारत की एकता अखंडता को खतरा पहुंचता इस कारण आजादी के पश्चात भारत के राज्यों का गठन व्यापक जनसंख्या घनत्व भाषाई आधार पर किया गया परंतु वह जनसंख्या घनत्व एक व्यापक जनसंख्या को दर्शा रहा था।

परिणाम :-

स्वतंत्र भारत में भाषाई विषमता का परिणाम यही है कि आजादी के पश्चात भारत में भाषा की विविधता ही आज देश की विश्व स्तरीय पहचान बन चुकी है इसी भाषा की विषमता ने आज भारत की विविधता में एकता के सिद्धांत की धारणा को मजबूत किया है आज हमारे देश में देश के अलग-अलग हिस्सों में अलग-अलग तरह की भाषाएं बोली जाती है इसमें हिंदी इंग्लिश तमिल तेलुगू कन्नड़ गुजराती मराठी मलयालम असली उड़िया इत्यादि शामिल है आज देश में इतनी भाषण विभिन्नता के बावजूद भी लोग अलग-अलग भाषाएं सीख रहे हैं

आज भी भाषा को लेकर राज्य के द्वारा एक अलग राज्य निर्माण की मांग उठती रहती है देश की एकता अखंडता के लिए खतरा साबित होती है परंतु देश सिर्फ उन्ही भाषिक मांगों को स्वीकार करता है जो जरूरी है तथा जो संवैधानिक है उदाहरण के लिए हाल ही में 2 जून 2014 को तेलंगाना आंध्र प्रदेश से अलग होकर एक अलग राज्य बना जो अति आवश्यक था इस कारण इन दोनों राज्यों के मध्य विवाद

अनुभवमणि
www.fromoldbooks.org

की स्थिति खत्म हो गई तथा देश में शांति का माहौल बना यह संवैधानिक में जरूरी था।

निष्कर्ष :-

जैसा कि हम जानते हैं कि आजादी के बाद भाषा गत विषमता ही हमारे देश की राष्ट्रीय पहचान बन चुकी है अतः हमें इस राष्ट्रीय पहचान को बरकरार रखना चाहिए सरकार के द्वारा हिंदी को राष्ट्रभाषा के रूप में प्राथमिकता देकर इसके प्रसार को राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ावा देना चाहिए साथ ही साथ सभी राज्यों की क्षेत्रीय भाषाओं के विकास पर भी ध्यान देना चाहिए तथा जितने भी औपचारिक कार्य होते हैं धीरे-धीरे उन्हें हिंदी भाषाओं की तरफ स्थानांतरित करना चाहिए प्रशासनिक कार्यों में सरकारी नौकरियों की परीक्षाओं में तथा उन सभी कार्यों में जहां-जहां अंग्रेजी का प्रयोग होता है उसके प्रयोग को सीमित कर दे हिंदी के विकास को बढ़ावा देना चाहिए तथा धीरे-धीरे हिंदी भाषा को राष्ट्रीय स्तर पर नीति निर्माण के द्वारा शैक्षणिक संस्थानों के सहायता से राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व धारण क्षमता समावेशन वाली भाषा के रूप में ढालना चाहिए ताकि एक समय के पश्चात यह देश की राष्ट्रभाषा बन सके।

गौरव यादव

शिवाजी कॉलेज

www.fromoldbooks.org

मातृभाषा हिंदी

हिंदी है हमारे देश की शान

यही है हम सबका स्वाभिमान।

यही है सच्चे हिंदुस्तानी की पहचान

है हर भारतीय का मान स्वाभिमान।

यह हर भारतीय की तो है मातृभाषा

लेकिन हमारे देश की है राजभाषा।

वैज्ञानिक भाषा संस्कृत का शुद्ध रूप है हिंदी

रचनाकारों की वास्तविक अभिव्यक्ति है हिंदी।

सूरदास कबीर दास तुलसीदास जैसे

कवियों का काव्य है हिंदी

पाठकों के मन का मूल भाव है हिंदी।

वैश्विक युग में अंग्रेजी का बोलबाला है

इसलिए हमने हिंदी के महत्व को टाला है।

अंग्रेजी भले सीखो तुम लेकिन

इसकी वैज्ञानिकता को ना भूलो तुम।

मुझसे तुमसे और इस समस्त देश से है इसका सार

इसलिए विश्व भर में बढ़ रहा है इसका प्रसार।

www.fromoldbooks.org

दुबे सर लोकगीत गायन प्रतिभागियों को पुरस्कृत करते हूए

ये पल याद आएगें, हर पल

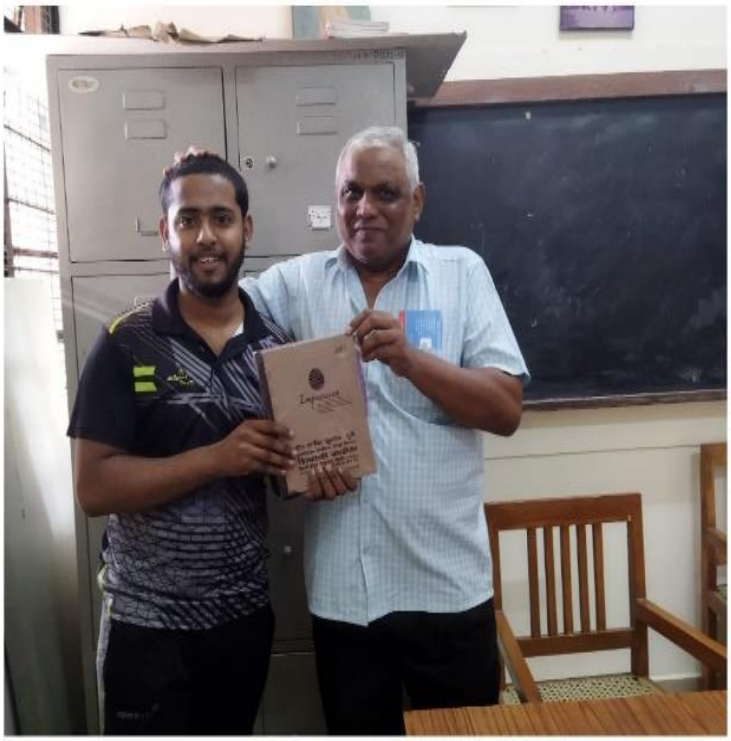

छात्र हिताए, दुबे सर सुखाए

अनुभवमणि

www.fromoldbooks.org

दुबे सर छात्रों को पुरस्कृत करते हुए

याद आएगें हर पल, हमें ये स्वर्णीम पल

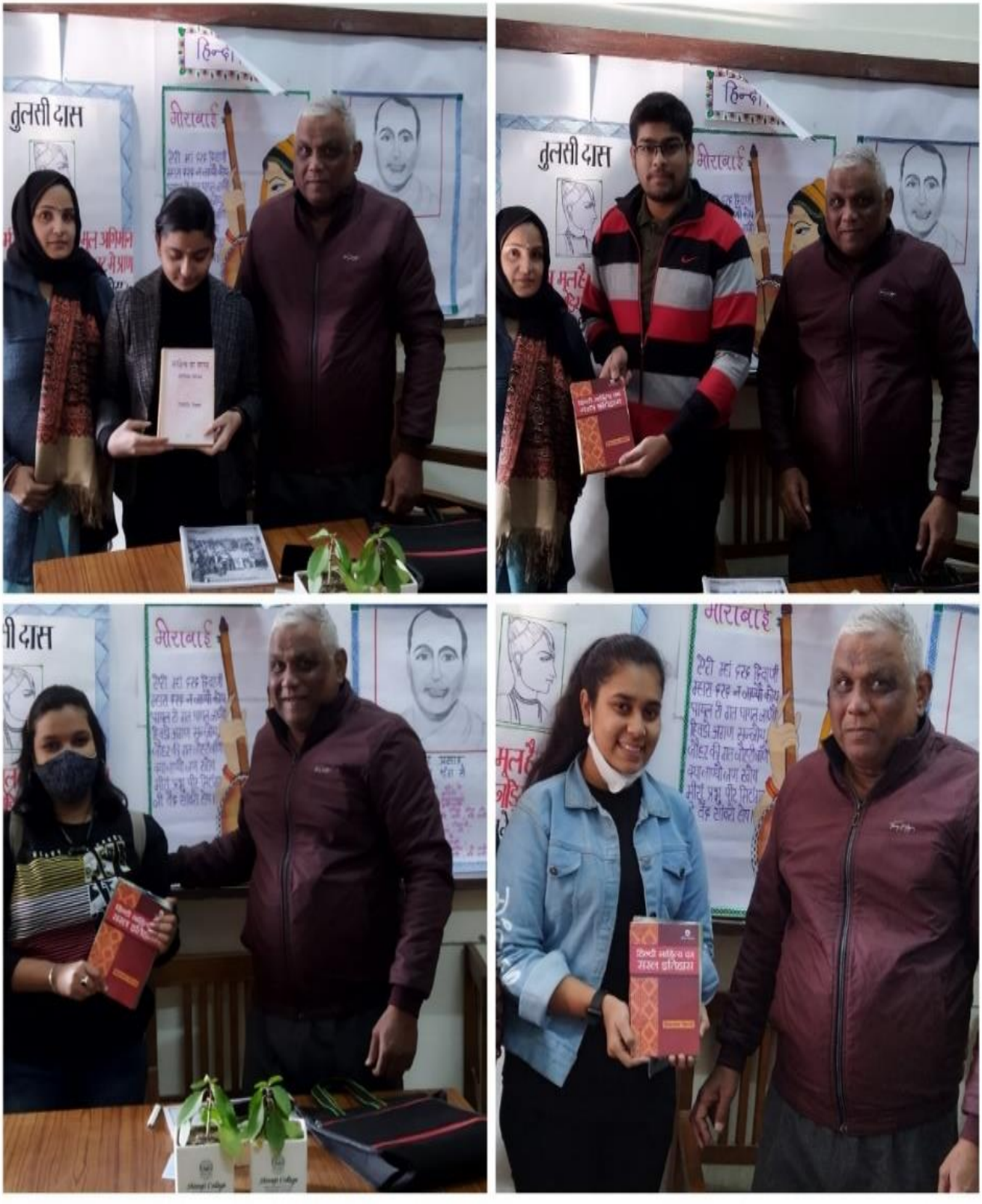

www.fromoldbooks.org

एक यादगार याद

वंदना कुमारी

कहां से शुरु करूं कुछ समझ नहीं आ रहा है। ऐसा शायद इसलिए है क्योंकि मुझे मेरी भावनाओं को इतने ठीक ढंग से बताना नहीं आता। जो भी हो आज मैं अपनी भावनाओं और अपने अनुभव को जरूर सभी के सामने रखना चाहूंगी जो मैंने कॉलेज जाने से पहले या फिर अपनी स्कूल की क्लास में अपने दोस्त से बात करते समय सोचा था कि जब हम अपने कॉलेज में जाएंगे तो वह दिन कैसा होगा। वैसे हम सारे दोस्तों ने यह सोचा था कि हम सभी एक ही कॉलेज म एडमिशन लेंगे लेकिन ऐसा हो नहीं पाया।

हालांकि कोरोना महामारी की वजह से हम सभी ज्यादा समय अपने कॉलेज में तो नहीं बीता पाए लेकिन वह कहते है ना "यादें कम ही हो लेकिन यादगार होनी चाहिए।" मैं एक अंतर्मुखी लड़की थी तो इसलिए मेरी ज़्यादा कोई इच्छा नहीं थी अपने कॉलेज के पहले दिन को लेकर, ना ही मैंने यह सोचा था कि मैं जब अपने कॉलेज जाऊंगी तो क्या क्या करुंगी। लेकिन जो भी हो जैसे-जैसे हमारे कॉलेज जाने का पहला दिन करीब आने लगा धीरे-धीरे मेरे मन में घबराहट, खुशी और उमगं तीनों भावनाएं उमड़ने लगी। और अगर बात करें घबराहट कि, तो पहले दिन कॉलेज जाने की घबराहट तो थी ही, लेकिन उससे ज्यादा डर मुझे अकेले बस में सफर करने और सही समय पर सही बस स्टैंड पर उतरने का लग रहा था क्योंकि मैं पहली बार बस में अकेले सफर करने जा रही थी। हालांकि मेरा परिवार भी मेरी इस खास दिन के लिए बहुत उत्साहित था लिखना उन्हे भी इस बात क थोड़ी फिकर थी कि मैं अकेले बस में सफर कैसे करूंगी।

www.fromoldbooks.org

कर के अपने कॉलेज पहुंची लेकिन मुझे मेरी क्लास ढूंढने में थोड़ी परेशानी हुई मगर मैंने सारी चीज़े ठीक ढंग से कर ही ली थी और सच बताऊं तो न जाने क्यों ऐसा कर के मुझे खुद पर ही बड़ा नाज़ हो रहा था। हां ये सभी के सामने बताना तो काफी अजीब है लेकिन मैंने इससे पहले ऐसा कभी महसूस नहीं किया था। मेरे चेहरे की मुस्कुराहट छुपाए नहीं छुप रही थी।धीरे-धीरे दिन बीतने लगे हमारी क्लासेस लगती और खाली समय में कैंटीन में जाकर कुछ खरीद के खाना ज्यादा पसन्द करती थी और सच बताऊं तो वहां के समोसे सबसे अच्छे थे। हालांकि अभी मेरे कोई दोस्त नहीं था लेकिन फिर भी मैं अकेले खुश रहती थी। मेरे कक्षा के बच्चे भी मेरे प्रति काफी अच्छा व्यवहार करते थे। लेकिन जो भी हो अगर सच बताऊं तो एक स्टूडेंट कि जिंदगी जीने में जो मजा है वह कहीं भी नहीं |

वैसे मैंने कभी, ऐसा सोचा नहीं था कि कॉलेज में बिताया इतना कम वक़्त ही मेरे लिए इतना ज्यादा महत्वपूर्ण बन जायेगा कि जब मैं कभी इन्हें पन्नो पर लिखना चाहूंगी और लिखते समय मेरे कलम और हाथ को बिल्कुल भी आराम नहीं मिलेगा लेकिन जो चीज बिल्कुल भी सोची ना हो अक्सर वह चीज हमारे साथ हो जाती है । पर सच बताऊं तो मेरे अपने इन कुछ बेहतरीन पल को कॉपी पर लिखते और सबके सामने प्रस्तुत करते वक्त एक अजीब सी शांति महसूस हो रही है और इस बात का एहसास भी की समय कितनी जल्दी निकलता है कहां हम सभी कभी स्कूल में पढ़ते थे और कहां आज हम कॉलेज की पढ़ाई भी पूरी करने वाले हैं हालांकि कुछ चीज़े एक विद्यार्थी के जीवन में कभी नहीं बदलती और शायद कभी बदलेगी भी नहीं लिखना वह है हमारे प्यारे अध्यापकों की डांट और फटकार। लेकिन शायद यही छोटी -छोटी चीज़े एक छात्र के अनुभव को और यादगार बनाते हैं।

www.fromoldbooks.org

परंतु आज इन शब्दों को अपने हाथ से लिखते हुए काफी अच्छा महसस हो रहा है। चेहरे पर एक बड़ी सी मुस्कुराहट है लेकिन मेरे मन में एक अजीब सा दुख भी है कि अब बस कुछ वक्त बाद ये सब कुछ हमारे दिलो-दिमाग में बस याद कि तरह रह जाएगा.....

वंदना कुमारी
हिंदी विशेष ,शिवाजी कॉलेज

www.fromoldbooks.org

कॉलेज की यादें

प्रीति

अपने कॉलेज के जीवन के बारे में बात करते हुए, मैंने अपने कॉलेज जीवन का पूरी तरह से आनंद लिया था और मेरे जीवन के कुछ सबसे अच्छे दिन थे |

मैं दिल्ली विश्वविद्यालय के सबसे प्रतिष्ठित, शिवाजी कॉलेज की छात्रा हूँ | मैंने यहां पर बीए ऑनर्स हिंदी में दाखिला लिया यह 'ए' ग्रेड मान्यता प्राप्त कॉलेजों में से एक है एक बड़े क्षेत्र में निर्मित यह विज्ञान, वाणिज्य, कला और मानवीकी जैसी धाराओं में कई पाठ्यक्रम के साथ एक सुंदर कॉलेज है।

कॉलेज का पहला दिन.... कौन भूल सकता है घर से मिली आजादी खुशी मनाने का दिन जो था। उस दिन कॉलेज की ओर बढ़ने वाला हमारा हर कदम दिल की धड़कन और भी बढ़ा देता था, खुशी और घबराहट की कॉकटेल लिए कॉलेज के कैंपस में घूमना आज भी भूलाए नही भूलते |

कॉलेज की वह पहली क्लास।

उफ़... वो भी क्या दिन थे, नए - नए चेहरों के बीच उस दिन जिंदगी बड़ी अकेली लग रही थी। लेकिन यह नहीं पता था आने वाले कुछ दिनों में ये सारे चेहरे ही हमारी जिंदगी का हिस्सा बन जाएंगे।

कॉलेज लाइफ की सबसे अच्छी बात यह है कि आपको हर दिन एक नया अनुभव मिलता है मेरे कॉलेज की जीवन में अध्ययन के साथ

www.fromoldbooks.org

मैंने और मेरे दोस्तों ने अन्य चीजों का भरपूर आनंद लिया हमने बहुत सारी जगहों की यात्रा की,नए अनुभव किए, नई नई चीजें सीखी।

हमारे कॉलेज की कैंटीन व सी प्वाइंट मेरे कॉलेज जीवन का महत्वपूर्ण स्थान था क्योंकि जब भी हमें समय मिलता हम अपना समय व्यतीत करते थे यह वह पल थे दोस्तों के साथ के जो मेरी खुशियों को दुगुना करते थे जो भूलने पर भी नहीं भूल पाएंगे ।

ऐ-जिंदगी कोलेज वाले ख्वाब लौटा देना,

मेरे बिछड़े मित्रों को दोबारा मुझसे मिला देना।

वार्षिक फेस्ट, यह ऐसा कार्यक्रम है, जो कॉलेज की यादों को और रोमांचक बना देती है। हर साल दिल्ली विश्वविद्यालय का हर कॉलेज वार्षिक उत्सव का आयोजन करता है जो दो-तीन दिनों तक चलता है। इस वार्षिकोत्सव में बहुत सी प्रतियोगिताएं होती है विभिन्न कॉलेज इसमें हिस्सा लेने आते हैं इस उत्सव पर कॉलेज द्वारा विभिन्न अभिनेता-अभिनेत्री, गायक एवं गायिकाओं या किसी महान हस्ती आदि को बुलाया जाता है। हम इस वार्षिक उत्सव का भरपूर आनंद लेते हैं।

कॉलेज मेरे जीवन का सबसे अच्छा समय रहा है और इस समय का आनंद हमने भरपूर लिया है ।

देखते ही देखते समय बीतता चला गया 1 वर्ष कब पूरे हुए पता ही नहीं चला। कॉलेज की जिंदगी काफी अच्छी चल रही थी अचानक एक पल ऐसा आया जिसमें हम सभी घरों में बन्द हो गए, ना बाहर जाने की अनुमति, ना किसी से मिलने की।

www.fromoldbooks.org

कॉलेज की आनंद पूर्ण जीवन की जगह कोविड-19 ने ले ली और सब कुछ बेरंग हो गया। हमने जो अभी-अभी सीखना समझना शुरू किया था | वह सब खत्म हो गया |ऑफलाइन कक्षाओं की जगह ऑनलाइन ने ले ली, जो हमारे लिए दुखद था| ज्यादा समस्या नेटवर्क की थी | जिससे कुछ कक्षा ले पाते थे और कुछ नहीं। एक ऐसा अनुभव था जिसे ना कभी किसी ने सोचा था ना ही देखा था।

आखिर वह दिन आ ही गया जिसके बारे में याद करके आज भी आंखें नम हो जाती हैं उस दिन सारे गिले-शिकवे किनारे रख कर एक बार गले लगने का सुख भुलाए नहीं भूलता। इस वादे के साथ की साल में एक बार जरूर मिलेंगे।

सच, कितना हसीन था वह पल जहां

छोटी-छोटी चीजें भी हमें एक अजीब सी खुशी दे जाती है।

और आज उन्हीं बातों को हम बचपन कह कर टाल देते हैं।

कॉलेज लाइफ किसी व्यक्ति के जीवन में एक उल्लेखनीय और आवश्यक समय है और सभी को इस का आनंद अवश्य लेना चाहिए यह नई चुनौती और संघर्षों का सामना करने के लिए हमारे आत्मविश्वास का निर्माण करती है।

प्रीति
हिंदी विशेष ,शिवाजी कॉलेज

www.fromoldbooks.org

मेरा अनुभव

शिखा

जब मैं स्कूल में पढ़ती थी, तो महाविद्यालयों (कॉलेजों) में पढने वाले छात्रों को बड़ी उत्सुकता और गौर से देखा करती थी। कई बार सोचती, वह दिन कब आएगा, जब मैं मनचाहे कपड़े पहन, किताबों के भारी बस्ते के बोझ से छुटकारा पाकर केवल हाथ लटकाए हुए ही महाविद्यालय में जाया करूंगी। वहां से आकर अपने छोटे बहन-भाइयों और स्कूल के जूनियर सहपाठियों पर रोब झाड़ा करूंगी कि आज यह किया वह किया वगैरह सच कहती हूं कि बारहवीं तक एक रसता का स्कूली जीवन जीते-जीते मेरा मन पूरी तरह से ऊब गया था। स्कूल में रोज वही एक रंग की वर्दी, वही किताबों-कॉपियों के ढेर, मास्टरजी द्वारा जब चाहा कक्षा में खड़ा कर देना या डांट देना-सभी कुछ तो एक जैसा ही थी। इस कारण जब बारहवीं कक्षा की परीक्षा दी, बाद में परिणाम आने पर मैं अच्छे अंक लेकर उतीर्ण हो गई, तो बड़ी खुशी हुई। बाद में थोड़ी भाग-दौड़ करने पर एक महाविद्यालय में इच्छित विषय में प्रवेश भी मिल गया। तो मैं स्कूल के सीमित और घुटनभरे वातावरण से निकल कॉलेज के खुले और स्वतंत्र वातावरण में जाने की तैयारी करने लगी। वर्दी से अब छुटकारा मिल गया, तो मैंने कई बढिया कपड़े सिला लिए। मन में भी अब मैं नए भाव और विचार संजोने लगी कि किस प्रकार महाविद्यालय में जाकर पढूंगी-लिखूंगी तो अवश्य, पर स्वतंत्रता का सुख भोगते हुए शान से रह भी सकूंगी।

www.fromoldbooks.org

सोलह जुलाई की सुबह ! मैं आज अन्य दिनों की तुलना में जल्दी जाग गई। व्यर्थ में इधर-उधर बैठकर समय भी नहीं बिताया। नहाया-धोया और पसन्द की बढ़िया कपड़े निकालकर पहनी। तब तक माँ ने नाश्ता तैयार किया; पर जाने क्यों, आज ठीक प्रकार से पहले की तरह पेट भर नाश्ता नहीं कर सकी । नोटबुक उठाकर जब घर से चलने लगी, तो दिल धड़क रहा था। मां ने कहा, आज पहले दिन कॉलेज जा रहे हो, ठीक से रहना और समय पर घर लौट आना। उनकी बात का उत्तर मात्र 'हूँ' में देकर मैं उछलते मन से घर से निकल पड़ी। तेज़ क़दम बढ़ाती हुई बस-स्टाप पर आई!

वहा पर मेरी दोस्त भी खड़ी थी मेरे इंतजार मे हम दोनो साथ कॉलेज पहुंचे।

कॉलेज गेट पर पहुंचे तो वहां गार्ड खड़े थे जो कॉलेज का आई कार्ड देख कर अंदर भेज रहे थे । हम दोनो अंदर गए और अपनी कक्षा को ढूंढा । वहा पहुंचे तो वहां एक मैम बैठी थी जिन्होंने हमें अंदर आने को बोला और हमारा परिचय पूछा. ऐसे सभी कक्षाओं में पहले दिन परिचय लिया गया| कॉलेज का माहौल स्कूल से बिल्कुल अलग था. कोई रोक टोक नही मेरा पहला दिन कैसे बीत गया मुझे पता ही नही चला कॉलेज लाईफ अच्छी चल रही थी तभी एक खतरनाक संक्रामक बीमारी आई जिसने सब कुछ एक पल में बदल दिया। कोरोना ने सब को चारदीवारी के अंदर लाकर बंद कर दिया । जिसके चलते हमारा कॉलेज एक फोन में समा गया, हा मतलब सब कक्षाएं ऑनलाइन और पेपर भी ऑनलाइन शुरुआत में, तो किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था बच्चे और अध्यापक एक दूसरे से सामंजस्य नही बैठा पा

www.fromoldbooks.org

रहे थे तथा बहुत से बच्चे गांव मे रहते थे जहा नेटवर्क प्रॉब्लम होती थी और बहुत से बच्चों के पास अपना फोन तक नहीं था पर धीरे धीरे कालेज के द्वारा उनकी समयाओ को सुना गया और हल निकाला गया . थोड़ा समय लगा पर अब सब सही चल रहा है और यह सब सिर्फ हमरे कॉलेज के अंध्यापको की वजह से ही हो सका जिन्होंने खुद हार नही मानी और समय समय पर बच्चों को भी मार्गदर्शन दिया और उनको हार ना मानने के लिए प्रोत्साहित किया।

जब मैंने इस कॉलेज में प्रवेश लिया, तो मुझे वास्तव में डर लगा क्योंकि सभी लोग मेरे लिए नए थे। पर मेरे बहुत जल्दी बहुत सारे दोस्त बन गए। लाइफ की एक सबसे अच्छी बात यह है कि आपको हर दिन एक नया अनुभव मिलता हैं | हमने बहुत सारी जगहों की यात्रा की, नए अनुभव प्राप्त किए और कई नई चीजें सीखीं। हमारे कॉलेज की कैंटीन मेरे कॉलेज जीवन का महत्वपूर्ण स्थान था क्योंकि जब भी हमें समय मिलता था, हम कैंटीन में ठहरते थे।एक और चीज जो मुझे अपने कॉलेज के जीवन के बारे में पसंद थी वह है वार्षिक फेस्ट। हर साल, दिल्ली विश्वविद्यालय का हर कॉलेज वार्षिक उत्सव का आयोजन करता है जो 2-3 दिनों तक चलता है| आप सभी अध्यापकों का आभार मेरे सहपाठियों का बहुत-बहुत धन्यवाद आप सभी ने मिलकर मेरे 3 साल के जीवन को स्वर्णिम पलों जैसा बना दिया, आप सभी के साथ बिताए हर पल मुझे जीवन भर याद रहेंगे

शिखा

हिंदी विशेष ,शिवाजी कॉलेज

www.fromoldbooks.org

कॉलेज वाले दिन

अमृता गुप्ता

कॉलेज एक ऐसी जगह है जहां आकर सब, कुछ ना कुछ नया सीखते हैं और सिखाते है । कॉलेज में नए दोस्त ,अध्यापक और एक नया माहौल मिलता है। जीवन के स्तर की नई सीढ़ी पर चढ़ते हैं जो हम हमें आगे की राह दिखाकर हमारा मार्गदर्शन करती है और हमें बहुत कुछ नया सिखाती है।

कॉलेज के शुरुआती दिनों में कॉलेज बस से जाना, फिर दोस्तों के साथ मौज मस्ती कर ढेर सारी बातें करना उनके साथ घूमना फिरना, टीचर के बारे में पूछना कि आज वो टीचर आए, जिन्होंने काम दिया था अगर होमवर्क भूल जाते हैं थे तो जल्दी-जल्दी कॉलेज में ही टीचर के आने से पहले खत्म करना कि डांट से बच सके जब क्लास शुरू होती थी तो ऐसा लगता नहीं था कि हम पढ़ रहे हैं ऐसा लगता था कि टीचर से बातें कर रहे हैं और समय कैसे बीत जाता था, पता ही नहीं चलता था।

सरिता मैम का पढ़कर समझाना, कंचन मैम का कविता को विस्तार से बताना, दर्शन सर का कविताओं में रमजाना,समला मैम का तुलसीदास की पंक्तियों को गाकर पढ़ाना, तरूण सर, की कक्षा में बच्चों का समय से पहले पहुंच जाना,परवीन मैम का बच्चों को प्यार से विषय के बारे में समझाना, रुचिरा मैम का सुदृढ़ होकर कक्षाओं को चलाना, समझ न आने पर बार बार पूछने पर बतलाना, अरविंदर मैम का बच्चों से बार-बार उस विषय पर चर्चा कर स्पष्ट रूप से समझाना

www.fromoldbooks.org

विकास सर और वीरेंद्र सर का कक्षा में घुल मिल जाना कक्षा का समय समाप्त होने पर भी पूरी लगन के साथ पढ़ाना, राजकुमारी मैम का साहित्य में रम जाना और दुबे सर का कक्षाओं में समय के साथ कार्य को समाप्त कर समय के महत्व से परिचित करवाना ,अशोक सर का अलंकार को आनंदित रूप से पढ़ाना सभी अध्यापक हिंदी विभाग के अनमोल रत्न की तरह तराश कर बच्चों के जीवन को उज्जवल करने की ओर अग्रसर वा हमेशा तैयार है।

सभी अध्यापकों का व्यवहार बड़ा ही स्नेह पूर्ण रहा और कॉलेज में जो भी समय टीचर व दोस्तों के साथ बीते वह बड़े ही यादगार है।

अमृता गुप्ता
हिंदी विशेष ,शिवाजी कॉलेज

www.fromoldbooks.org

मेरा तजुर्बा

सचिन वर्मा

कहते हैं कि जब आपका लक्ष्य दमदार होता है तो आपको सफलता भी शानदार मिलती है। मेरा शिवाजी कॉलेज में दाखिला लेने का लक्ष्य था। मैं भी अपने भैया की तरह शिवाजी में पढ़ना चाहता था और जो कि मेरा दाखिला शिवाजी में हो गया। शिवाजी कॉलेज में मेरा पहला दिन जिस दिन ओरियंटेशन प्रोग्राम था। उस दिन मैं ओरियंटेशन प्रोग्राम में देर से शामिल हो पाया। क्योंकि मुझे बस पकड़ने में परेशानी हुई। प्रोग्राम के बाद मुझे आशुतोष, विवेक मिल गए उन लोगों के साथ मैं कॉलेज में टहलने लगा। तब तक देखा वहां टोकन से खाना मिल रहा है हमलोगों के पास टोकन था नहीं। फिर हम लोगों ने डॉक्टर दर्शन सर से टोकन प्राप्त किए, भूख भी लग रही थी और फिर हम लोगों ने भरपेट भोजन किया।

अगले दिन से विधिवत कक्षाएं शुरू हो गई। मैं प्रतिदिन कॉलेज आने लगा उसके बाद मेरे कई मित्र बन गए मुझे पुस्तकालय में पढ़ने का बड़ा शौक था। विशेषकर एसी वाले कमरे में कक्षाओं के बाद खाली समय पुस्तकालय में गुजरता था। उसके बाद से अब तक लगभग 3 वर्ष पूरे होने वाले हैं इन 3 सालों में लगभग 8 महीने ही कॉलेज गए होंगे उसके बाद 2 सालों से कोरोनावायरस महामारी का प्रकोप काफी तेजी से फैला हुआ है। तभी से ऑनलाइन कक्षाएं शुरू हो गई |

www.fromoldbooks.org

शुरू में ऑनलाइन कक्षाओं में नेटवर्क को लेकर काफी समस्याए आई| उसके बाद सब कुछ सुधर गया।

सभी अध्यापक और अध्यापिकाएं पढ़ाने में श्रेष्ठ रहे। अभी तीसरे वर्ष तक जितने भी अध्यापक व अध्यापिकाओं से मिले सभी स्वभाव बुद्धि आदि से अपने-अपने विषयों में सर्वश्रेष्ठ है।

डॉक्टर रुचिरा मैम कहानी और उपन्यास में, डॉक्टर अरविंदर मैम, कंचन मैम कविताओं में, डॉ तरुण सर, डॉक्टर विकास सर व्याकरण में, डॉ वीरेंद्र सर और डॉक्टर दर्शन सर नाटक और एकांकी में और डॉक्टर सर्वेश कुमार सर का कहना ही क्या भारतीय और पाश्चात्य साहित्य में गजब का तालमेल बिठाते हैं अरस्तु के अनुकरण सिद्धांत व अन्य विषयों को गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस से जोड़कर समझाते हैं। यह सब भूल पाना असंभव है कक्षा समाप्त होने के बाद फोन पर राकेश से क्या-क्या कक्षा में पढ़ाया गया, उसको दोहराना अवश्य याद आएगा |

उसके बाद तृतीय वर्ष में हिंदी विभाग की संस्था साहित्य संगम का कार्यकारिणी सदस्य बनाया गया जिसमें हमारी समिति ने सभी कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपन्न किए। मुझे अपने कॉलेज के जीवन में जो सबसे ज्यादा मजा आया वह कॉलेज के शैक्षणिक भ्रमण डॉक्टर विराट जोली सर के साथ ओखला पक्षी अभयारण्य में आया। वहां

www.fromoldbooks.org

तरह तरह के पक्षी, पेड़, पौधों का अवलोकन करने का मौका मिला कॉलेज कंपलेक्स में दोस्तों के साथ क्रिकेट खेलना तथा ऋषभ और जयप्रकाश के साथ विशाल मेगा मार्ट में शॉपिंग करना यह पल अवश्य याद रहेंगे साथ ही सभी अध्यापक वा अध्यापकों द्वारा दिए गए मार्गदर्शन वह उनका नम्र व्यवहार हमेशा याद रहेगा।

और अंत में मैं अपने सभी शिक्षकों और दोस्तों का शुक्रिया अदा करना चाहूंगा जिन्होंने मेरा 3 सालों में बहुत साथ दिया।

धन्यवाद

सचिन वर्मा
हिंदी विभाग, शिवाजी कॉलेज

www.fromoldbooks.org

हिन्दी विशेष, तृतीय वर्ष, शिवाजी महाविद्यालय के छात्र एवं छात्राएँ

प्रीति

हिमांशु दूण

गौरव शर्मा

संगीता राघव

सुनील सिंह

हर्ष त्यागी

उज्ज्वल

आरती

रोशन

दिनेश

मनजीत

सचिन वर्मा

सागर त्यागी

आशुतोष सिंह

संगीता गहलोत

यशवंत प्रताप सिंह

सौम्या दुबे

अंकित

हरी प्रिया शर्मा

शिखा यादव

हिमांशी

दुर्गेश पांडे

राहुल ठाकुर

मनीषा

संघमित्रा

रोहित कुमार

पार्थ

अमृता गुप्ता

ऋषभ वर्मा

विवेक कुमार

गौरव यादव

राकेश कुमार

मनजीत सिंह

अर्जुन कुमार

विनीत

दीपक

वीणा

वंदना कुमारी

सूरज

जयप्रकाश मिश्रा

क्रिया शक्ति

प्रकाश गोप

पिंकी

गौरव

मनीषा

मुकेश शर्मा

मीनल

अभय सिंह

गोविंदा

निखिल यादव

हर्ष

कल्याणी

अनुभवमणि

www.fromoldbooks.org

शैक्षणिक भ्रमण ओखला पक्षी अभयारण्य

🐦कुछ तस्वीरें 🔭दूरबीन🔭 तथा मोबाइल 📱 कैमरे के योग से 🦆पक्षियों🦆 की🐦।

www.fromoldbooks.org

शिवाजी महाविद्यालय के अध्यापक एवं अध्यापिकाएं

www.fromoldbooks.org

कार्यकारिणी चयन समिति

द्वारा चयनित छात्र कार्यकारिणी 2021-22 |

(साहित्य संगम, हिन्दी विभाग,शिवाजी महाविद्यालय)
(दिल्ली विश्वविद्यालय)

कार्यकारिणी परिचय

अध्यक्ष	आशुतोष सिंह(तृतीय वर्ष)
उपाध्यक्षा	अपूर्वा चौधरी(द्वितीय वर्ष)
कोषाध्यक्ष	विकाश चौहान(द्वितीय वर्ष)
सचिव	राकेश कुमार(तृतीय वर्ष)
सह-सचिव	मीनाक्षी शर्मा (प्रथम वर्ष) सत्यम पाण्डेय(प्रथम वर्ष)
तकनीकी प्रमुख	अभिषेक वर्मा(द्वितीय वर्ष)
तकनीकी सदस्य	प्रीति पाण्डेय,उदित शर्मा(द्वितीय वर्ष) रोशनी मिश्रा(प्रथम वर्ष)
सोशल मीडिया प्रमुख	गौरव यादव,अभय सिंह(तृतीय वर्ष)
सोशल मीडिया सदस्य→	पीयूष(प्रथम वर्ष)
कंटेंट प्रमुख	मनीषा (तृतीय वर्ष)
कंटेंट सदस्य →	वेद(प्रथम वर्ष)
कार्यकारिणी सदस्य →	शिखा यादव, मुकेश शर्मा, प्रीति, अमृता, सचिन,आरती, संगीता (तृतीय वर्ष)

कार्यकारिणी के विषय में कुछ शब्द

छात्र कार्यकारिणी का गठन तीनों वर्षों से कुछ योग्य छात्रों को चुन कर किया जाता है| कार्यकारिणी का गठन छात्रों के मानसिक तथा सामाजिक विकास के साथ- साथ छात्रों को आत्मनिर्भर बनानें की ओर एक प्रयास किया जाता है| छात्र कार्यकारिणी वर्षभर कई प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन करती है | ये सभी कार्य अध्यापकों तथा कार्यकारिणी प्रमुख की देख-रेख में किया जाता है| छात्र कार्यकारिणी हिन्दी विभाग(साहित्य संगम) को सुचारू रूप से कार्य करने में अपना विशेष योगदान देती है|

अनुभवमणि

www.fromoldbooks.org

ॐ असतो मा सद्गमय। तमसो मा ज्योतिर्गमय।
मृत्योर्मामृतं गमय ॥
ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः ॥

www.fromoldbooks.org